ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष -18 | अंक - 10 | अगस्त- II, 2017 | पाक्षिक | माउण्ट आबू | रु. 8.00

'गीता' योग शास्त्र है युद्ध शास्त्र नहीं

- योग ध्यान ही गीता का सच्चा मर्म - डॉ. नागेन्द्र
- पवित्रता ही सुख-शान्ति का आधार - स्वामी जीवन देव जी महाराज
- अपने स्त्य स्वरूप की पहचान न होना ही दु:ख का मूल कारण - आचार्य कर्मा तानपाई

भागवद्गीता पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में देश भर के विद्वान हुए एकमत - कहा, गीता ज्ञान से ही होगा सतयुगी दुनिया का निर्माण

ओ.आर.सी.-गुरूग्राम। ब्रह्माकुमारीज़ के ओम् शान्ति रिट्रीट सेन्टर में भगवद् गीता विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन हुआ। इस अवसर पर देश के अनेक विद्वान, आचार्य एवं महान विचारक उपस्थित रहे। कार्यक्रम के प्रारंभिक सत्र में विवेकानन्द योगा अनुसंधान संस्थान,बैंगलुरू के अध्यक्ष

डॉ. नागेन्द्र ने कहा कि योग और ध्यान ही भगवद्गीता का असली सार एवं मर्म है। उन्होंने कहा कि भगवद्गीता एक योग शास्त्र है न कि हिंसा का शास्त्र। वास्तव में गीता में वर्णित युद्ध मनुष्य के आंतरिक बुराइयों एवं अवगुणों को समाप्त कर दैवी गुणों को धारण करने का प्रतीक है। उन्होंने कहा कि योग को स्कूली स्तर से विश्व-विद्यालय स्तर तक लागू करने से ही परिवर्तन संभव है।

शान्तिधाम वृन्दावन से आये स्वामी जीवन देव महाराज जी ने बताया कि जीवन में आंतरिक एवं भौतिक पवित्रता का बहुत बड़ा महत्व है। पवित्र जीवन के आधार पर ही सुख-शान्ति का अनुभव हो सकता है। उन्होंने कहा कि दिव्य-गुणों को अपनाने से हम दुखों से मुक्त हो सकते हैं।

नेपाल से आये अंतर्राष्ट्रीय धर्मगुरू आचार्य कर्मा तानपाई ने अपने सम्बोधन में कलियुग को अज्ञान अंधकार का समय बताते हुए कहा कि ऐसे समय पर ही वास्तव में ज्ञान सूर्य परमात्मा के दिव्य अवतरण की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि अपने वास्तविक स्वरूप की अनभिज्ञता ही वास्तव में दु:खों का मूल कारण है।

कार्यक्रम के मुख्य संयोजक राजयोगी ब्र.कु. बृजमोहन ने संगोष्ठी के मुख्य उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए कहा कि गीता के सही अर्थ को न जानने के कारण ही आज मानव असमंजस में है। उन्होंने कहा कि अगर हम गीता के सही महत्व को जान जाएं तो विश्व में एक बहुत बड़ा परिवर्तन आ सकता है। उन्होंने लोगों से आग्रह किया कि काम वासना सहित सभी विकारों पर विजय प्राप्त करने का सहयोग दें। उन्होंने कहा कि गीता में परमात्मा ने कई बार काम विकार को सभी पापों का मूल बताया है।

ओ.आर.सी. की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. आशा ने स्वास्तिका को कल्प के चारों युगों की अवधि का प्रतीक बताते हुए कहा कि सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग तथा कलयुग, मनुष्य का बेहतर जीवन से कम बेहतर और द्वापर के बाद गिरावट के रास्ते पर चलने का काल चक्र है। उन्होंने कहा कि अब कलयुग के अन्त में परमात्मा का अवतरण हुआ है फिर से मानव को दानव से देव बनाने के लिए, ईश्वरीय ज्ञान और सहज राजयोग के बल से। कार्यक्रम में आए मेहमानों का स्वागत करते हुए उन्होंने कहा कि आप जैसे महान एवं प्रबुद्ध जन ही गीता के असली रहस्य को लोगों तक पहुँचा सकते हैं।

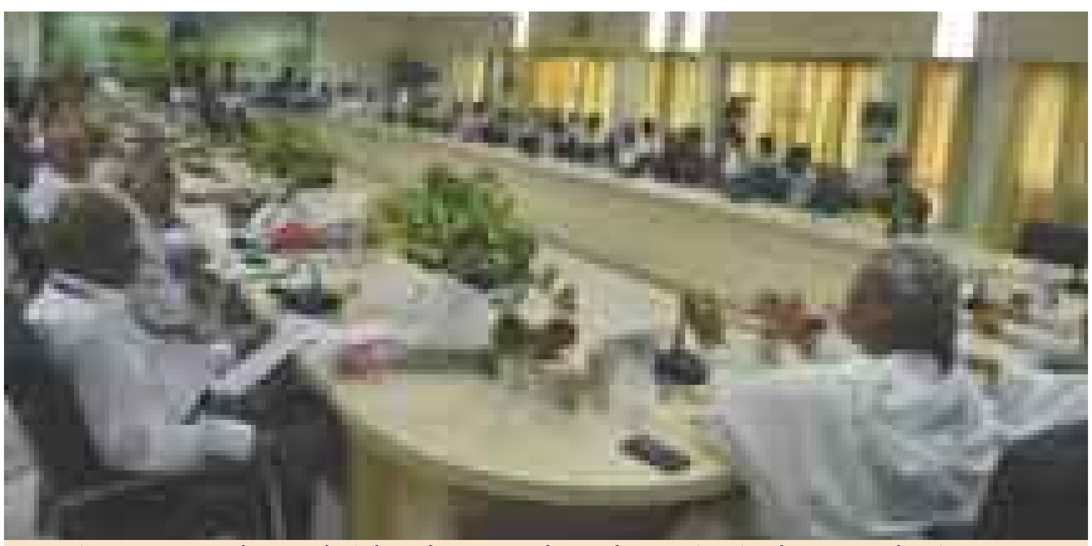

भगवद्गीता विषय पर आयोजित संगोष्ठी में अपने विचार रखते हुए ओ.आर.सी. की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. आशा।

भारत के राष्ट्रपति महामहिम राम नाथ कोविंद को बधाई एवं शुभकामनाएं देने के पश्चात् ईश्वरीय स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए ओ.आर.सी. निदेशिका ब्र.कु. अशा तथा खानपुर सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. आशा।

उर्दू प्रेस के प्रसिद्ध स्तम्भकार डॉ. मुज़फ्फर हुसैन गज़ाली ने कहा कि यही अति धर्मग्लानी का समय है जब इसका अन्त करने के लिए तथा एक बेहतर जीवन और समाज का निर्माण करने के लिए खुदा का धरा पर आना होता है, यही गीता का मूल संदेश भी है।

ब्रह्माकुमारीज़ के मुख्यालय,माउण्ट आबू से आयीं गीता स्कॉलर राजयोगिनी ब्र.कु. ऊषा एवं जबलपुर से भगवद्गीता की व्याख्याता डॉ. पुष्पा पाण्डे ने भगवद्गीता पर देश के अनेक प्रान्तों से आए हुए गीता विशेषज्ञों से विचार-विमर्श किया। सभी ने इस विषय पर सहमति जताते हुए कहा कि वास्तव में गीता में वर्णित युद्ध कोई भौतिक नहीं अपितु मन का अन्तर्द्वन्द्व है। सभी ने स्वीकार किया कि गीता का ज्ञान परमात्मा शिव ने कलियुग के अन्त में सतयुगी दुनिया की स्थापना के लिए दिया। सभी ने ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा दी जा रही आध्यात्मिक शिक्षा एवं राजयोग ध्यान को परमात्मा के द्वारा दिए जा रहे वास्तविक गीता ज्ञान व योग का व्यवहारिक स्वरूप कहा।

राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग, भारत सरकार के पूर्व अध्यक्ष जस्टिस वी. ईश्वरैया ने कहा कि गीता हमें अहिंसा परमो धर्म की प्रेरणा देती है। गीता को उसके सही संदर्भ में जानने की आवश्यकता है।

सम्मेलन के मुख्य संयोजक पत्रकार वेलफेयर एसोसिएशन के अध्यक्ष राजीव निशाना ने लोगों तथा समाज में गिरते हुए नैतिक स्तर पर चिन्ता व्यक्त की और कहा कि ब्रह्माकुमारी संस्था लोगों की नैतिकता और चरित्र निर्माण की दिशा में सराहनीय कार्य कर रही है।

संगोष्ठी में विशेष रूप से उत्तराखण्ड संस्कृत विश्व-विद्यालय हरिद्वार के पूर्व उप-कुलपति प्रो. महावीर अग्रवाल, श्री जगतनाथ संस्कृत विश्व-विद्यालय के पूर्व उपकुलपति प्रो. अलेख चन्द्र सारंगी, कुरूक्षेत्र संस्कृत विश्व-विद्यालय के संस्कृत विभाग के प्रमुख डॉ. एस.एम. मिश्रा, उत्कल विश्व-विद्यालय के पूर्व उप-कुलपति प्रो. बिनायक रथ, न्यू दिल्ली टाइम्स की प्रमुख संपादक डॉ. प्रमिला श्रीवास्तव आदि मान्यवरों ने उपस्थित रहकर अपने अपने विचार व्यक्त किये।

'गणेश' और हमारा जीवन...

वर्षा ऋतु के आने पर 'गणपति बप्पा मोर्या...' की गुंजन छोटे या बड़े मनुष्य के मन मस्तिष्क से बाहर निकलकर वातावरण में सुनाई देने लग जाती है। क्या कभी आपने गणेश की मूर्ति या चित्र को ध्यान से देखा है? अगर आप उसे अच्छी तरह से देखेंगे तो उनके चित्र से ही आध्यात्मिकता का रहस्य जो सीधे हमारे जीवन से जुड़ा हुआ है, आपको ज्ञात होने लगेगा।

आपने इस बात पर ध्यान दिया होगा कि गणपति जब बैठे होते हैं तो उनके दाहिने पाँव का थोड़ा-सा भाग पृथ्वी को स्पर्श कर रहा होता है जबकि बाहिनी टांग ऊपर उठी होती है। बायाँ पाँव, दायीं टांग से दबा होता है। चित्रकार अथवा मूर्ति निर्माता किन्हीं आध्यात्मिक रहस्यों को व्यक्त करने के लिए ही गणपति जी का ऐसा आसन दिखाते हैं।

- ब्र.कु. गंगाधर

शरीर-विज्ञान के अनुसार हमारा दायाँ हाथ और दायीं टांग हमारे मस्तिष्क के बायें भाग से जुड़े होते हैं और हमारी बायीं टांग और बायाँ हाथ हमारे मस्तिष्क के दायें अर्द्ध भाग (राईट हेमिस्फेयर) से जुड़े होते हैं। मस्तिष्क-विज्ञानवेत्ता (ब्रेन साइंटिस्ट्स) कहते हैं कि हमारे मस्तिष्क का बायाँ भाग तर्कप्रधान और विश्लेषणात्मक (एनालिटिकल) तथा सूक्ष्म अन्वेषण (एब्सट्रैक्ट थिंकिंग) में कुशल होता है, जबकि हमारे मस्तिष्क का दायाँ भाग हमारे संवेगों (इमोशन्स) का केन्द्र है। यदि इस दृष्टिकोण से देखा जाए तो तर्क प्रधान बायें अर्द्ध भाग से जुड़ी हुई दायीं टांग का पृथ्वी को स्पर्श करना संसार तथा इसके तथ्यों (फैक्ट्स) से सम्पर्क बनाये रखने का प्रतीक है। यह इस बात का सूचक है कि यह व्यक्ति इस बात को मानता है कि संसार बना हुआ है (अर्थात् यह स्वप्न-मात्र नहीं है) और कि हमें यहाँ रहते हुए, यहाँ की समस्याओं को हल करना है न कि इनसे आँख मूंद लेनी है।

इसी प्रकार मस्तिष्क के दायें अर्द्ध भाग से जुड़ी हुई बायीं टांग और बायें पाँव का ऊपर उठे रहना और दायीं टांग से दबे रहना इस बात का सूचक है कि हमारे संवेग और आवेग (इमोशन्स) इस पृथ्वी के आकर्षण से ऊपर उठे होने चाहिए और यह विवेक के अधीन होने चाहिए। ज्ञानवान व्यक्ति के ज्ञान की यही सफलता है कि वह सांसारिक मोह-ममता से उपराम रहता है। वह सांसारिक कर्त्तव्यों को भी निभाता है; वह ऐसा नहीं कहता कि ''हे रामजी, जगत बना ही नहीं है'',परन्तु सांसारिक कामनाओं और तृष्णाओं से ऊँचा उठा रहता है।

गणपति जी के सिंहासन से यह दोनों भाव प्रदर्शित होते हैं- एक तो यह कि वे अभी उठे कि उठे अर्थात् यह कि एक टांग तो उन्होंने नीचे कर ही ली है और दूसरी टांग वे अभी नीचे करना ही चाहते हैं। उनकी इस बैठक से दूसरा भाव यह निकलता है कि उन्होंने एक टांग तो उठा ही ली है और दूसरी भी वे उठा ही रहे हैं क्योंकि तभी तो उनका पाँव केवल थोड़ा-सा स्पर्श ही कर रहा है। यदि हम इनमें से प्रथम भाव लें तो उससे यह प्रतीत होता है कि वे सदा तैयार (एक्टिव एंड एलर्ट) हैं। मतलब वे जब चाहें, कार्य-क्षेत्र में उतर आयें। उनकी इस बैठक से दूसरा यह भाव प्रदर्शित होता है कि उन्होंने मन को संसार से समेट तो पहले ही रखा है, निमित्त मात्र वे कर्म क्षेत्र पर हैं और इस पर भी वे क्षण में ही मन को इससे पूर्णत: हटाकर ऊपर की स्टेज में अविलम्ब रीति से स्थित हो सकते हैं, अर्थात् उनकी ऐसी बैठक भी उनकी ज्ञान-निष्ठ स्थिति की परिचायिका है।

गणपति का वाहन-मूषक

यह कितना विचित्र है कि इतने भारी-भरकम गणपति जी के लिए वाहन है-चूहा! अवश्य ही इसका भी कोई गहन अर्थ होगा। चूहे की यह विशेषता है कि वह हर चीज़ को, चाहे महंगी हो या सस्ती, कुतर-कुतर करता रहता है। अपने खाने के लालच के कारण दूसरे की हर चीज़ को टूक-टूक करके रख देता है। ठीक ऐसे ही कुछ लोग दूसरों की हर एक बात को चाहे वह कितनी ही समझदारी की मूल्यवान क्यों न हो, कुतर-ब्योंद करते हैं। वो तर्क का प्रयोग, बात को गहराई से समझने और लाभान्वित होने के उद्देश्य से नहीं करते बल्कि उसका अनुचित प्रयोग करके बात को टूक-टूक करने में लगाते हैं। वे समझते हैं उसे विवेक, परन्तु वह सद्विवेक की बजाए होता कुविवेक। वो हंस की तरह का नहीं, बल्कि चूहे की तरह का लक्षण है। ज्ञानवान व्यक्ति ऐसी प्रवृत्ति को अपने काबू में रखता है। वो तर्क भले ही करे परन्तु कुतर्क नहीं करता, अर्थात् वो तर्क को अपने वश में रखकर प्रयोग करता है। इसी अर्थ में चूहा (मूषक) गणपति जी का वाहन है। गणपति विवेकवान, तर्क सम्पन्न हैं परन्तु वह

- शेष पेज 7 पर

निश्चयबुद्धि बन आगे बढ़ने से हमारी विजय निश्चित

अभी हमारे हर संकल्प में, हर श्वास में, हर समय परमात्मा की स्मृति हो। शरीर में हैं तो भी स्मृति है, अगर शरीर अभी छूट जावे तो भी स्मृति में रहें क्योंकि जितना सिमरण करेंगे, सिमर-सिमर सुख पायेंगे उतना कलह-क्लेश मिटेंगे। थोड़ा भी नाराज़गी है तो उसको रखो नहीं, तुरंत मिटा दो। राज़ी रहने से बहुत खुशी होती है इसलिए कभी भी नाराज़ नहीं होना है। इसके लिये हर राज़ को समझना है, जो कुछ हो रहा है अच्छा है, जो होगा सो अच्छा, जो हुआ वो अच्छा... इसलिए मेरे को यह राइट हैण्ड का हाथ अच्छा लगता है। आप भी शान्ति में बैठके यह रिहल्सल करो कि जो हुआ... अच्छा है, जो हो रहा है अच्छा है, जो भी होगा वो अच्छा ही होगा। बस। क्या बोलूँ और, एक परमात्मा बाप हमारे से खुश और मैं उसकी पढ़ाई में जो कमाई है उससे खुश। तो ज़्यादा सोचो नहीं, एक बिन्दी लगाओ तो 10 हो जायेंगे, दूसरी बिन्दी लगाओ 100 हो जायेंगे, तीसरी बिन्दी लगाओ 1000 हो जायेंगे। समझा, सिम्पल बात है। बिन्दी कहाँ लगानी है एक शिवबाबा दूसरा न कोई। शिव भोला भण्डारी है ना, यह वन्डरफुल है। है भोला भण्डारी और कहता है मैं जन्म मरण में नहीं आता हूँ, इसलिए ब्रह्मा तन में आकर के अपना परिचय ज्ञान का सागर है, प्रेम का सागर है, शान्ति का सागर है, वो अनुभव कराता है, बहुत अच्छा है। तो निश्चय बुद्धि, निश्चिंत रहना, निमित्त बनके अपनी जीवन यात्रा सफल करना। परन्तु धरती पर पाँव न हो तो क्या बनेंगे? फरिश्ता। फरिश्तों के पाँव धरती पर नहीं होते हैं। सदा ही कदम-कदम में पदमों की कमाई है इसलिए पाँव को मैला नहीं बनाना है। अगर पाँव से धरनी पर चलेंगे तो मैले हो जायेंगे इसलिए सदा ही पाँव को साफ रखो, क्योंकि इस पाँव यानी इन कदमों से ही तो सारे विश्व की सेवा करनी है। ऐसे नहीं विश्व की सेवा करने के लिये मेरे को पैसा चाहिए, मेरे को ये चाहिए, इस चाहिए चाहिए को छोड़ो। चाहिए-चाहिए करेंगे तो अन्त मते सो गते... कोई भी ऐसे ख्याल रखने से गति भी ऐसी हो जायेगी, इसलिए कभी भी स्थिति ऊपर नीचे न हो, प्रैक्टिकली निश्चय का बल हो, तो निश्चयबुद्धि विजयंती। भले तन यहाँ है पर मन ऊपर में है, इधर उधर नहीं देखो, ड्रामा अनुसार यह जो पृथ्वी है ना, गोल दिखाते हैं। वहाँ से पैदल चलते हैं क्या! अंगुली से वो भी इशारा करता है, बच्चे निश्चय की कमाल देखते जाओ। जब बाबा अव्यक्त हुआ तो ज़रा भी हमको यह नहीं लगा अभी कैसे चलेगा। नहीं। यह भी जानते हैं और देखा है विकर्माजीत, कर्मातीत और अव्यक्त स्थिति को पाने के लिये बाबा ने कैसे पुरुषार्थ किया। बाबा के चेहरे को देख लगता था, यही पुरुषार्थ है। विकर्माजीत माना कोई भी रॉन्ग काम नहीं हो सकता है। विकर्माजीत बनने से कर्मातीत बन सकते हैं। जो कुछ हुआ, हो गया, उसका न चिंतन है, न वर्णन है। तो सहनशीलता और समाने की शक्ति से कोई भी बात के विस्तार में नहीं जाते हैं। हमको क्या करने का है, उसको ध्यान में रखना है।

दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

दिल कहती है शुक्रिया बाबा आपका, जो आपने यहाँ बिठाके अपना बनाके कैसी-कैसी सेवायें करा रहे हो। सेवा करते नशा चढ़ा हुआ है हम किसके हैं! निमित्त भाव, निर्माण चित्त के बीच में नम्रता भाव कितना न्यारा प्यारा बना देता है। हरेक का पार्ट अपना है, न्यारा है, दो एक जैसे नहीं हो सकते। जिसके चित्त में सच्चाई है वो आनन्द स्वरूप है, सत्, चित्त, आनन्द स्वरूप, ऐसी स्थिति में सदा रहना। बाकी सफेद कपड़े जेब खाली, कुछ नहीं है। वो चला रहा है, हम चल रहे हैं। देख रहे हैं सभी, यहाँ से उठो कहाँ जा रहे हैं? कितना अच्छा मेरा बाबा है, जो कहता है तुम यहाँ सिर्फ शान्त रहो, खुश रहो। कोई पूछते हैं आप कैसे शान्त रहते हो? अरे, यह मेरा भाग्य है। भगवान मेरा साथी है और ड्रामा में जो पार्ट है वो बजाने में खुश हैं। तो साथी और साक्षी माना मैं क्या करूँ? करा रहा है ना, ज़िम्मेवारी उसके ऊपर है। हमको सिर्फ कहता है चल उड़ जा रे पंछी, यह देश हुआ बेगाना...। अब इस देश में क्या काम है तुम्हारा...। तो बाबा ने हमेशा निश्चय बुद्धि विजयंती का हमको अच्छा पाठ पढ़ाया है। निश्चय बुद्धि, निश्चिंत रहना। निमित्त भाव और नम्रता से चलना।

अटेंशन के साथ रोज़ स्वयं ही स्वयं की चेकिंग करो

दादी हृदयमोहिनी
अति.मुख्य प्रशासिका

बाबा ने खास मधुबन वालों को कहा है कि अगर रिज़ल्ट ठीक निकली तो मैं आऊंगा, मिलूंगा। तो इतनी बाबा ने जब ऑफर की है, तो हम लोगों को अटेन्शन भी इतना देना चाहिए। तो बाबा ने जो कहा कि व्यर्थ संकल्प नहीं चलें, यह चेकिंग किसने की? रिज़ल्ट ठीक रही? चार्ट भी सिर्फ कॉपियों में भरने के लिये नहीं रखना, चार्ट रखना माना चेन्ज। हम भी पहले-पहले रोज़ चार्ट लिखते थे वो ठीक है। लेकिन यह चेक करें कि हमारे में फर्क पड़ रहा है? चार्ट क्यों लिखते हैं? स्वयं को चेंज करने के लिए लिखते हैं ना क्योंकि किसी समय कुछ भी हो सकता है। बाबा अचानक का पाठ तो हमको दे ही रहा है। तो हमारा पुरुषार्थ ऐसा है? मैंने देखा है पुरुषार्थ सभी का चलता है लेकिन चलते-चलते पुरुषार्थ में दृढ़ता कम हो जाती है। जिस समय संकल्प किया, उस समय तो दृढ़ता होती है फिर जब कर्म में आते हैं, बातचीत करते हैं, जो भी ड्युटीज़ होती हैं उसमें आते, संगठन में आते दृढ़ता कम हो जाती है। और दृढ़ता ही सफलता की चाबी है, अगर दृढ़ता कम हो गई तो सफलता जो चाहते हैं वो नहीं होती है। होती है लेकिन जैसा चाहते हैं वो नहीं होगी। तो बाबा ने अटेन्शन खिंचवाया है, उसी अनुसार हम क्या समझते हैं! अटेन्शन है? आज से मेरा संकल्प है कि हर एक को रोज़ अपना दृढ़ता का चार्ट देखना चाहिए। जो भी मैंने पुरुषार्थ में संकल्प किया, उसमें दृढ़ता चलती रही या थोड़ा अलबेलापन आ जाता है, ठीक है कर तो रहा हूँ, हो जायेगा, रहेगा थोड़ेही, टाइम पर पूरा हो जायेगा... ऐसे दृढ़ता कम करने के संकल्प जो आते हैं वो हमको ढीला कर देते हैं। और बाबा को रोज़ अपना सारे दिन का चार्ट देवें जैसे बड़े को देना ही है, ऐसे नहीं बाबा को दिया ना, ऐसे नहीं दृढ़ता से दिया! अपने फायदे को सोच करके दिया या ऐसे ही सुना है तो देना ही है। तो अब कोई प्लैन बनाओ, बना सकते हैं? कैसे बनायेंगे? बना तो सकते हो, शाबाशी है लेकिन कैसे बनायेंगे? अपना अपना बनायेंगे या कोई ग्रुप बैठ करके बनायेगा? क्या सोचा है? तो पक्का है? कल से सभी रात्रि को बाबा को अपनी रिज़ल्ट देके और जो भी कुछ हो गया उसकी माफी भी अभी ले लो। बाबा के हिसाब से तो व्यर्थ संकल्प भी गलती है, तो व्यर्थ संकल्प हमारे चले? समझो कोई चीज़ देखी, यह हो रहा है, उसके संकल्प चल पड़ते हैं यह क्यों हुआ, क्या है, कैसे है, यह कहाँ तक चलेगा, यह नहीं होना चाहिए, मतलब ऐसे फालतू संकल्प चलते हैं.. क्योंकि मेरी ज़िम्मेवारी है ही नहीं इसकी। तो चेक करना है लेकिन पता कैसे पड़े कि चेक आपने किया या नहीं? हम तो कनेक्शन में आते ही नहीं हैं, उसकी क्या विधि हो? अपने ही मन को पक्का करना होगा क्योंकि रोज़ तो कोई आपस में मिलता ही नहीं है तो अपना ही मास्टर बनके अपने को चेक करना पड़ेगा, और कोई विधि नहीं है। इसमें अपने आप ही हेड बनना पड़ेगा। तो एकदम दृढ़ निश्चय करो, दो अक्षर लिखना है, बस। डायरी रखनी है फिर कभी भी बाबा डायरी मंगा के देख सकता है। डायरी में ज़्यादा नहीं लिखना है। व्यर्थ संकल्प चले? कितना टाइम चले? कभी कभी एक ही टाइम पर व्यर्थ संकल्प 10 मिनट भी चल सकते हैं, 2 मिनट भी चल सकते हैं लेकिन टोटल सारे दिन में कितना व्यर्थ संकल्प चले? या मैंने जो लक्ष्य रखा सवेरे कि आज मैं इस बात पर खास अटेन्शन दूँगा, तो वो भी चेक करो कि सारे दिन का जो हमने संकल्प रखा स्वरूप का वो मेरा ठीक रहा या नहीं? बस। तो यह कर सकते हैं? हो सकता है? क्योंकि हमारा बाबा से प्यार है, लेकिन प्यार में यह व्यर्थ का जो विघ्न पड़ता है उसको मिटाना है। बाबा का आप सबसे प्यार है तो बाबा कोई भी बात अगर सुनते हैं तो बाबा को अच्छा नहीं लगता है। तो हम जिस लक्ष्य से आये हैं, वो लक्ष्य हमारा पूरा हो रहा है या नहीं?

पवित्र शक्तियों का ईश्वरीय सेवा में समर्पण

अरावली श्रृंखला के मध्य स्थित, प्रकृति के अनोखे आँचल में बसा एक स्थान, जहाँ पर पवित्रता को सम्पूर्णतया धारण करने वाली दिव्य आत्माओं से सुसज्जित एक प्रांगण, जहाँ की महक सभी को अपनी तरफ ही आकर्षित कर लेती है। वहीं एक अनोखा दृश्य था जिसमें तीन सौ पवित्र रचनाओं, कुमारियों ने परमपिता परमात्मा के सर्वोत्तम परिवर्तन के कार्य के लिए स्वयं को आजीवन समर्पित किया। जिसकी आँखों देखी कुछ झलकियाँ आपके समक्ष हैं...

सावन में शिव की हो गयी तीन सौ युवा बहनें, समर्पण समारोह में अभिभावक भी उपस्थित

शांतिवन। सावन मास परमात्मा भोलेनाथ शिव का मास माना जाता है। ऐसा माना जाता है कि परमात्मा शिव की दिल से पूजा अराधना करने से सहज ही प्रसन्न हो जाते है। परन्तु यदि सावन मास में जब परमात्मा शिव को ही अपना वर बना लें तो इससे अच्छा और क्या हो सकता है। ऐसा ही कुछ हुआ ब्रह्माकुमारी संस्था के शांतिवन के भव्य डायमण्ड हॉल में, जब देश के कोने कोने से आयी तीन सौ बाल ब्रह्मचारिणी युवा बहनें अपने जीवन की डोर परमात्मा शिव को सौंपकर संस्थान में समर्पित हो गयीं। इस अवसर पर उनके माता पिता और नाते रिश्तेदार भी उपस्थित थे।

इस कार्यक्रम में आये हज़ारों लोगों को सम्बोधित करते हुए ब्रह्माकुमारी संस्था की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी ने कहा कि यह जीवन कई जन्मों से उत्तम है। जिसके जीवन में स्वयं परमात्मा का वास हो जाता है, वह हमेशा के लिए बुराइयों से मुक्त हो जाता है। परमात्मा की तन मन धन से सेवा करने के लिए आजीवन समर्पित होना महान पुण्य का कार्य है।

कार्यक्रम प्रबन्धिका ब्र.कु. मुन्नी ने इन पवित्र युवा बहनों से आह्वान किया कि वे जीवन में उच्च आदर्श एवं मूल्यों को धारण कर महान बनें और दूसरों के लिए प्रेरणादायी बनें।

संस्था के महासचिव ब्र.कु. निर्वैर ने कहा कि हमारी बहनों ने यह सिद्ध कर दिया है कि यदि नारी चाहे तो विश्व को बदल सकती है, किसी भी कुरीति और बुराइयों को समाप्त कर सकती है। ये बहनें खुद का सकारात्मक बदलाव करते हुए समाज को भी बदल कर ही रहेंगी, जहाँ सभी सुख-शांति और चैन से रहेंगे।

कार्यक्रम में संस्थान के अतिरिक्त महासचिव ब्र.कु. बृजमोहन, शांतिवन प्रबन्धक ब्र.कु. भूपाल, ब्र.कु. अमीरचंद समेत कई लोगों ने अपने अपने विचार व्यक्त किये।

क्या है समर्पण: ब्रह्माकुमारी संस्था के सम्पर्क में आने के बाद कम से कम पाँच साल तक प्रशिक्षु के तौर पर राजयोग मेडिटेशन के साथ संस्था के नियमों पर सम्पूर्ण रूप से चलने वाली बहनों का समर्पण होता है। जिसमें उनके माता पिता की भी सहमति होती है। इसके लिए पूरी तरह से ईश्वरीय अलौकिक रस्में निभायी जाती हैं।

सेवा स्थानों पर होता है स्थानान्तरण: समर्पण के बाद सभी बहनें संस्थान के देशभर में फैले सेवाकेन्द्रों पर चली जाती हैं। वहाँ रहकर अपने जीवन की आध्यात्मिक उन्नति के साथ दूसरों के जीवन में भी उन्नति कराकर सुकून लाने की सेवा करती हैं और हमेशा ईश्वरीय सेवाओं में तत्पर रहती हैं।

भव्य स्वागत: समारोह के आरंभ में कुमारियों को पीली चुन्रियों में सजाकर बैंड बाजों के साथ उनका भव्य स्वागत किया गया, जिसमें उनके माता पिता तथा परिवार के लोग भी शरीक हुए।

शपथ ग्रहण समारोह: कार्यक्रम के बीच समर्पण के दौरान समर्पित होने वाली बहनों को अपने लक्ष्य और श्रेष्ठ कर्म के लिए उनसे दृढ़ प्रतिज्ञा करायी गयी, जिससे कि वे अपने लक्ष्य में कामयाब हो सकें और सबका कल्याण भी कर सकें।

समर्पण समारोह के दौरान देश के कोने कोने से आई तीन सौ पवित्र बहनें तन मन धन से ईश्वरीय सेवा में समर्पित होने का शपथ ग्रहण करते हुए।

क्या कहना है इस अद्भुत दृश्य का, जिसमें रथी, सारथी, दोनों छवि अनुपम है, आँखों से ओझल ना होने वाला दृश्य, जिसे चिरकाल तक याद रखा जाए, उसकी झलकियाँ यहाँ पर दिखीं। मनोरम और मनोहारी छवि जिसमें एक पवित्र कन्या, परम पवित्र परमात्मा के साथ जुड़कर अपना जीवन, परमात्म कार्य में सम्पूर्ण रूप से समर्पित करने जा रही हो, और जाए भी क्यों ना! क्योंकि वह सच्चा पति-परमेश्वर है, जिसे कभी भी किसी तरह की हानी जीवन में होने वाली नहीं है।

आज इस कलियुग के दौर में कोई भी पूर्णतया सुरक्षा की ज़िम्मेवारी ले नहीं सकता, लेकिन परमात्मा ही एक ऐसा साथी है, जिसके साथ हम हर समय सुरक्षित महसूस कर सकते हैं। पवित्रता के आधार से जीवन जीना, वो तो सोने पर सुहागा हो ही जायेगा।

आत्मबल से इस पथ पर चलने वाली कुमारियों ने स्वेच्छा से इस जीवन को चुना है, और विश्व परिवर्तन के इस महाकुम्भ में अपना सबकुछ दे दिया है। अब उनके लिए यही है, बस परमात्मा। यह कार्य इतना बड़ा है कि उसके लिए पवित्रता ही एक नींव है, जो इस कार्य को अंत तक थामे रख सकती है। आप सोचिए, आधुनिक युग में लोग क्या-क्या नहीं कर रहे हैं! आज के युवक-युवतियाँ दुनिया की भ्रान्तियों में फँसे पड़े हैं। उसमें से निकल कर सत्य राह चुनना काबिले तारीफ है।

खुद भी पवित्र बने, औरों को भी बनाया है, आज इसी की ज़रूरत है सभी को। थोड़ी सी ब्रह्माकुमारियाँ अपने इस जीवन से बहुतों का जीवन पवित्र बना रही हैं। यही बहनें ही दरअसल दुर्गा, गायत्री, पार्वती हैं, जिनकी आप महिमा गाते हैं।

इन पवित्र कन्याओं को, जीवन को जीवनमुक्ति दाता से जोड़ने वाली, अपने को सर्वश्रेष्ठ और सभी के जीवन को सर्वश्रेष्ठ बनाने के निमित्त आत्माओं को शत् शत् नमन्।

समारोह के दौरान समर्पित होने वाली पवित्र कुमारियों के साथ कैंडल लाइटिंग करते हुए राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी, ब्र.कु. मुन्नी, ब्र.कु. भारती दीदी, राजयोगिनी ईशू दादी, ब्र.कु. सरला तथा ब्र.कु. शारदा।

पवित्र राह चुना है पवित्र कन्याओं ने,
परमात्मा के साथ सगाई चिरकाल की।
यह राह ले जायेगी स्वर्णिम दुनिया की ओर,
इन्हीं की होती आरतियाँ, ये हैं जगत जननी पार्वतियाँ।।

चाइना-गुआंगझोउ। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर ब्रह्माकुमारीज़ तथा कॉन्सुलेट जेनरल ऑफ इंडिया के संयुक्त तत्वावधान में सिटी सेंटर के फाइव स्टार होटल में आयोजित कार्यक्रम के दौरान समूह चित्र में ब्र.कु. सपना तथा अन्य भाई बहनें।

जगन्नाथपुरी-ओडिशा। सेवाकेन्द्र में आने पर आध्यात्मिक चर्चा के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. प्रतिमा, फादर जोशी जॉर्ज, क्रिस्टो ज्योति महाविद्यालय, सासन,सम्बलपुर के विद्यार्थीगण तथा अन्य।

जोगिन्दर नगर-हि.प्र.। सामुदायिक भवन में आयोजित कार्यक्रम में लोगों को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. भारत भूषण।

सिवनी मण्डी। आध्यात्मिक कार्यक्रम में हरियाणा के माननीय मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर का स्वागत करते हुए ब्र.कु. राजिन्दर तथा ब्र.कु. निर्मल।

सिवनी-हरियाणा। आध्यात्मिक चर्चा के पश्चात् पूर्व शिक्षा मंत्री बहादुर सिंह को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. राजिन्दर तथा ब्र.कु. निर्मल।

मण्डी-हि.प्र.। लाइफ स्किल एज्युकेशन कैम्प के दौरान अशोक शर्मा,शिक्षा उपनिदेशक को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. शीला। साथ हैं ब्र.कु. अरुण।

इलाहाबाद-उ.प्र.। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए ब्र.कु. मनोरमा, रमा सिंह,केन्द्रीय बाल एवं महिला कोषाध्यक्षा, गोपालजी महाराज,सच्चा बाबा आश्रम अरैल, धीरेन्द्र मिश्रा,योगाचार्य, पुष्पा अग्रवाल,सत्कार ग्रह, ब्र.कु. सुषमा, ब्र.कु. सुधा, ब्र.कु. शैलजा, ब्र.कु. शालिनी, ब्र.कु. श्वेता, ब्र.कु. पूजा तथा ब्र.कु. प्रियंवदा। सभा में शहर के गणमान्य लोग।

चण्डीगढ़। 'व्यसन मुक्ति अभियान' के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए ब्र.कु. डॉ. प्रताप मिड्ढा व ब्र.कु. डॉ. बनारसी लाल शाह,माउण्ट आबू, ब्र.कु. डॉ. सचिन परब,मुम्बई, डॉ. राकेश गुप्ता,पंजाब, अनुराग अग्रवाल,होम सेक्रेट्री,चण्डीगढ़ तथा ब्र.कु. उत्तरा।

जयपुर-राजापार्क। 'मधुर मधुमेह शिविर' का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. पूनम, ब्र.कु. डॉ. नायर,माउण्ट आबू तथा ब्र.कु. सन्नू।

स्वीकार कर लेंगे तो डिस्टर्ब नहीं होंगे

गतांक से आगे...

प्रश्न: हमें औरों की प्रतिक्रिया से परेशान या गुस्सा नहीं होने के लिए क्या करना होगा?

उत्तर: आप दूसरों के बारे में कुछ भी गलत सोचना बंद करें और अपने-आप से बात करें कि वो ऐसा करने के लिए स्वतंत्र हैं। हम सिर्फ उनसे आग्रह कर सकते हैं कि आप अपने मोबाइल को साइलेंट मोड पर रख दें या बंद कर दें। लेकिन उसके बाद पसंद उनकी है। हमें हर एक की पसंद को सम्मान देना है। हमें कभी भी यह आशा नहीं करनी चाहिए कि सारी दुनिया हमारे ऑर्डर में चलने वाली है। ये जो मोबाइल बजा, वो उतनी अशांति पैदा नहीं करता है, लेकिन हम जो ये सुनकर क्रुद्ध हो जाते हैं, वो मोबाइल से ज्यादा परेशानी पैदा करता है।

फिर अगर किसी का मोबाइल बजता भी है तो तुरंत अपने सोच के ढंग को बदल दें और यह सोचें कि कितना अच्छा ट्यून है, बहुत अच्छा संगीत है, बहुत अच्छी मोबाइल है तो इससे आप परेशान भी नहीं होंगे और आपकी एकाग्रता भी बनी रहेगी। फिर चाहे कितनी ही बार मोबाइल क्यों न बजे। मोबाइल हमें परेशान नहीं कर रहा है, हम जो क्रुद्ध हो जाते उससे ज्यादा डिस्टर्बेंस होती है। उससे हमारी एनर्जी का स्तर भी घट जाता है। जहां कहीं भी हम इस तरह से थोड़ा-थोड़ा क्रुद्ध होते हैं तो हमें यह बंद कर देनी चाहिए क्योंकि आगे चलकर यह हमारी आदत बन जाती है। फिर मुझे पता भी नहीं चलेगा और हमें लगेगा कि क्रुद्ध होना तो स्वाभाविक है।

प्रश्न: मैंने जो कहा वो होना चाहिए अगर नहीं होता है तो मुझे चिढ़ होने लगती है। जैसे मान लो कि हमने कहा कि फूल को यहां से यहां रखना चाहिए तो वैसा ही रखा होना चाहिए, अगर नहीं होता है तो चिढ़ होने लगती है।

ब्र.कु. शिवानी

प्रश्न: फिर यह धीरे धीरे बढ़ती जाती है। इसलिए जहां आप नोटिस कर रहे हो माना कि आपने उस पर और ही अटेंशन डाल दिया तो हमें स्वयं ही स्वयं से बात करनी चाहिए। अगर हम उनको बोल सकते हैं मोबाइल ऑफ करो, तो उसी तरह हम अपने को भी तो बोल सकते हैं क्रुद्ध मत होओ। हम हमेशा दूसरों को आदेश क्यों दें, स्वयं को क्यों नहीं।

हर समय मैं क्रुद्ध हो जाती हूँ और यदि जानकारी है तो पता चल जाता है कि हम क्रुद्ध हुए हैं, उसके बाद हमें अंदर से अच्छा नहीं लगता है। आज के बाद अगर किसी प्रोग्राम में मोबाइल बजेगा तो उसे आप स्वीकार कर लो और ये सोचो कि आप अकेले तो नहीं हैं जो डिस्टर्ब हो रहे हैं। बाकी लोगों ने तो उसे स्वीकार कर लिया, तो आप क्यों नहीं उसे स्वीकार कर लेते हो। यदि आप क्रुद्ध होते हो तो बाकी तो वैसे ही बैठे हैं क्रुद्ध होने के लिए। अब जिनका मोबाइल बजता है ना घूम करके लोग उसको घूरते हैं। जबकि यह नियम के अनुसार गलत है। एक्सेप्ट माना, आप उस चीज़ को स्वीकार कर लेते हो। अब होता क्या है कि जिसका मोबाइल बजता है, वो तो उसे ऑफ करना भूल जाते हैं। जैसे ही उनका मोबाइल बजता है पहले तो वो ही एकदम से घबरा जाते हैं और जल्दी से पर्स से मोबाइल निकालने की कोशिश करने लगते हैं। वो जो सबकी एनर्जी उन तक पहुंचती है उनको वो मोबाइल मिलता ही नहीं है उनके पर्स में। फिर मोबाइल में उनको पता ही नहीं चलता है कि उसको कैसे 'स्वीच ऑफ' करना है। आप देख सकते हैं कि इरिटेशन करने से उसका क्या प्रभाव पड़ रहा है। क्रुद्ध होने से आपकी क्षमता एकदम से घट जाती है। आपका मोबाइल बजा, कोई बात नहीं, थोड़ी देर के बाद शांति से उसे बंद कर दें। तब व्यक्ति अनुभव करता है कि मुझसे कोई क्रुद्ध नहीं हुआ। तो वो भी उसको आराम से ऑफ कर देते हैं। ये हम सबको ध्यान रखना है आपस में एक-दूसरे के साथ काम करते हुए कि एक-दूसरे को हम स्वीकार करें, क्योंकि हर कोई शांति से कार्य करना चाहता है। - क्रमशः

स्वास्थ्य

बढ़ती तोंद पर योग से लगाएं लगाम

बढ़ता कमर का घेरा कई दिक्कतों का कारण बनता है। यह न सिर्फ रोगों को बढ़ाता है, बल्कि चलने-फिरने और जोड़ों को भी प्रभावित करता है। ऐसे में कुछ योगासनों से पेट की चर्बी कम कर सकते हैं। ये योगासन चर्बी घटाने के साथ कई तरह के लाभ देते हैं।

मोटापे को रोकने के कई उपाय बताए गए हैं, उनमें से योग भी एक है। कुछ खास योग आपकी मदद कर सकते हैं।

शलभासन

ऐसे करें...

पेट के बल लेटें और हथेलियाँ जांघों के नीचे रखें। ठोडी को ज़मीन से लगायें और धीरे-धीरे पैरों को ऊपर उठाएं। घुटनों को मुड़ने ना दें। दोनों पैरों को जितना ऊपर ला सकते हैं,

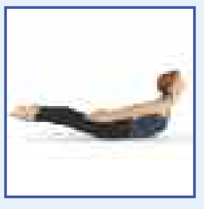

लायें। कुछ सेकंड इस स्थिति में रुकें। धीरे-धीरे पूर्वावस्था में आएं। 30-30 सेकंड के पाँच राउंड करें। आँखें बंद और एकाग्रता पीठ व पेट पर हो।

ये न करें...

पीठ या कमर में अधिक दर्द हो, तो एक पैर से भी इसे किया जा सकता है। हर्निया व अपेंडिक्स के मरीज इसे न करें।

फायदे...

यह जोड़ों के दर्द के अलावा पाचनशक्ति बढ़ाता है और एसिडिटी की समस्या से भी निजात दिलाता है।

धनुरासन

ऐसे करें...

पेट के बल लेटें। दोनों पैरों को घुटने से मोड़ लें। दोनों हाथों से दोनों पैरों को टखनों के पास से पकड़ लें और धीरे धीरे शरीर को ऊपर की ओर खींचें। हाथ एकदम खिंचे होने चाहिए।

ये न करें...

पेटदर्द, पीठदर्द, गर्दन दर्द और घुटने के दर्द में यह आसन न करें।

फायदे...

यह शरीर को लचीला बनाकर रक्त संचार को बेहतर करता है। यह श्वास संबंधी समस्याओं जैसे अस्थमा और ब्रॉन्काइटिस में भी फायदेमंद है।

शशांकासन

ऐसे करें...

इसे करने के लिए वज्र मुद्रा में बैठ जाएं और आँख बंद करें। सांस लेते हुए अपने हाथों को ऊपर उठाएं। अब धीरे-धीरे श्वांस छोड़ते हुए आगे की ओर झुकें और हाथों को स्ट्रेच करते हुए ज़मीन को छुएं।

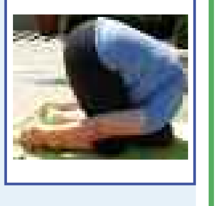

ये न करें...

पेप्टिक अल्सर से पीड़ित लोग और गर्भवती महिलाएं इसे न करें। इसके अलावा अगर घुटने में दर्द, पीठदर्द, हाई बीपी और अर्थराइटिस के मरीज हैं तो वज्रासन में न बैठें।

फायदे...

यह आसन स्फूर्ति लाने के साथ स्लिम बनाता है। यह पेट की मांसपेशियों को टोन करता है। इसके अलावा यह शरीर का रक्त संचार बढ़ाकर पेट व लिवर की कार्यक्षमता बढ़ाता है।

पहचानें मन की अद्‌भुत शक्ति को

आज हम मन से संबंधित कुछ ऐसे विषय को छूने जा रहे हैं जिसे मनोविज्ञान में डर या भय के साथ जोड़ा जाता हैं। अक्सर देखा गया हैं कि मनुष्य का सम्पूर्ण व्यक्तित्व इन्हीं डरों के इर्द गिर्द घूमता रहता हैं। मनुष्य का शरीर दो भागों में विभाजित हैं, स्थूल शरीर औंर सूक्ष्म शरीर। स्थूल शरीर के भाग को तो आप जानते ही हैं, वैंसे ही सूक्ष्म शरीर हमारी आत्मा के साथ जुड़ा होता हैं। उसी के अंदर भय दु:ख चिंता आदि रहते हैं। इन सभी का एक साथ समन्वय होना ही हमारे व्यक्तित्व को बदल देता हैं। इसलिए हम इसको एक श्रृंखला में करेंगे...

आत्मा को यदि मनोजैविक (साइको बायोलॉजी) रूप से देखा जाए तो हमारा जो मन है वो चार परतों से घिरा हुआ है। जिसमें पहला प्रकाशमय देह, दूसरा भावनात्मक देह, तीसरा बौद्धिक देह और चौथा भौतिक देह। इन चारों देह की दीवारों के मध्य मन अटका रहता है। इसमें सर्वप्रथम प्रकाशमय देह हमारी आभा का वो अंग है, जो भौतिक शरीर से चारो तरफ चिपका हुआ होता है यह अठारह इंच शरीर के चारो तरफ फैलता है। भौतिक शरीर की ऊपरी परत भी हम इसे कह सकते हैं, जो कि भौतिक शरीर की फ्रिक्वेंसी से अलग होता है। माँ के गर्भ में बच्चा प्रकाशमय देह के आधार से ही प्रवेश करता है, अर्थात् प्रकाशमय

शरीर के ढाँचे के आधार से भौतिक शरीर लेता है। अर्थात् कोई व्यक्ति यदि बुद्धि से कमज़ोर है, कोई विकलांग है, तो उसकी विकलांगता प्रकाशमय शरीर में छुपी हुई होती है। अर्थात् जब गर्भ में आत्मा इस शरीर द्वारा प्रवेश करेगी तो वहाँ उस अंग में आभा या प्रकाश नहीं फैलेगा, जहाँ उसे चोट लगी हो, उसका एहसास हमेशा प्रकाशमय शरीर में रहता ही है। उदाहरण के लिए जैसे किसी बच्चे के पेट में हमेशा दर्द रहता हो, और वो दर्द काफी सालों तक रहे, या फिर यूँ कहें कि वो हमेशा उस दर्द के बारे में कोसता रहे, कुढ़ता रहे, तो वो सारी विचार तरंगें आभा के अंदर बढ़ती रहती हैं और वो तरंगें जब आत्मा एक शरीर छोड़ दूसरे शरीर में प्रवेश करेगी तो वो तरंगें उस एहसास को लेकर चली जाएंगी, इसलिए अगर आपको किसी अंग में तकलीफ है तो आपका ये अभी का नहीं है, पिछले जन्म का है, जो आप आभा के अंदर लेकर आए हैं, और ये आने वाले समय में, कुछ दिनों में बच्चे के अंदर उभरना शुरू होता है। इसलिए हम चाहे कितना भी इलाज करा लें, वो ठीक नहीं होगा जब तक प्रकाशमय शरीर में ये वाले विचार हैं। इसलिए जब हम इन विचारों को हटा देंगे तो हमारा उस अंग से संबंधित दर्द हमेशा के लिए चला जाएगा। लेकिन इसकी एक विधि है, वो उसी अनुसार करने से होता है। अगले अंक में हम इसके बारे में विस्तार से चर्चा करेंगे।

- क्रमश:

ओमशान्ति मीडिया वर्ग पहेली-22-2017

1	2		■	■	3	4	5	6	7
8		9		10	■		■		
	■		■		■	11			
12	13		14				■		15
■		■			■	■	16	17	
18		19			■	■	■	20	
21					■	22	23		
■	■		■	24	■				■
25	26		27		■				■
28				29			30		

बनें विजेता : पहेली के कॉलम को काटकर व पेपर पर चिपकाकर उसके साथ उसका जवाब लिखकर हमें इस मीडिया के पीछे लिखे हुए पते पर भेजें। एक वर्ष के भीतर पूछे गए सभी पहेलियों में जिसका सबसे ज्यादा सही जवाब होगा उन्हें विजाताओं के लिस्ट में शामिल किया जाएगा और वर्ष के अंत में उन्हें आकर्षक ईनाम दिया जाएगा। इसलिए पहेली को ध्यान से पढ़िए, समझिए और भेज दीजिए हमारे पास उसका सही जवाब लिखकर और बनिए वर्ग पहेली के 'विजेता ऑफ द ईयर'।

पहेली की फोटो कॉपी या पोस्ट कार्ड पर भेजा गया पहेली का जवाब मान्य नहीं होगा। पहेली का जवाब भेजें तो उस लिफाफे पर आप अपना भी पूरा पता अच्छी लिखावट में लिखें, अपना मोबाइल नम्बर और हो सके तो अपना ई.मेल आईडी भी लिखकर भेंजें ताकि हमें पहेली का विजेता चुनने में कोई कठिनाई ना हो।

ऊपर से नीचे

1. बड़ा, रोग भले ही....था परंतु मातेश्वरी जी का आत्म नियंत्रण उससे कहीं अधिक बेमिसाल था (4)
2. समय, काल, पहर (2)
4. संगमयुग में शिव बाबा द्वारा ज्ञान व ....की शिक्षा मिलती है (4)
6. जगदम्बा सरस्वती को.... भी कहते हैं (4)
7. संगमयुगी आध्यात्मिक ज्ञान ही.... ज्ञान है (4)
9. समय, ...चक्र (2)
10. ....से मम्मा का जीवन जन सामान्य से उच्च था (4-4)
13. एक मीठा लम्बोतर कंद जो सब्जी में काम आता है (3)
14. कोई ऐसा कर्म न हो जो बाद में.... करना पड़े (4)
15. भक्त, पुजारी से पूजा कराने वाला व्यक्ति (4)
17. पराजित, गले की माला (2)
19. अब तुम्हें माया के सामने .... करनी है (4)
20. गम्भीरता और .... का बैलेंस हो (5)
22. मम्मा अपनी उच्च धारणा के कारण.... नाम से प्रसिद्ध हुईं (2-2)
23. छुट्टी, विश्राम दिवस (4)
25. सौ, सैंकड़ा (2)
26. सुलझाना, भूमि जोतने का यन्त्र (2)
27. एक छोटा वाद्ययन्त्र, संकेत सूचक आवाज़ (2)

बायें से दायें

1. बुद्धि, आत्मा के निर्णय शक्ति को.... कहते हैं (3)
3. थोड़ा, कम, तनिक (2)
4. खुशियों से भरा जीवन, हर पल में.... है (3)
8. कला का प्रदर्शन करने वाला, f-वशेष गुणी व्यक्ति (4)
11. विशेष योगी, मम्मा ही मातेश्वरी और.... हैं (4)
12. नियंत्रण, ज्ञान मार्ग में मन-बुद्धि पर... लगाना ज़रूरी है (3)
14. जब कोई परमयोगी अपने देह का....करता है तो वातावरण में गहन शांति के प्रकम्पन महसूस होते हैं (4)
16. सारी दुनिया एक डूबता....है उसे पार लगाना है (3)
18. सहजता, एक दिव्य गुण (4)
21. धान की....वर्षा ऋतु में पैदा होती है (3)
23. शांति, मानव.... चैन से रहना चाहता है (3)
28. नदियों, पहाड़ों, सागर का तट-वर्ती भाग (4)
29. अवधपति, अवध के राजा (4)
30. सौ वर्ष पूर्ण, सौ साल की अवधि (3)

- ब्र.कु. हरिशंकर यादव,वाराणसी

सुभाष नगर-उत्तराखण्ड। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए हरिद्वार से आये स्वामी श्री शिव रघुवंश पुरी जी, विधानसभा अध्यक्ष प्रेम चन्द अग्रवाल, विधायक चन्दन राम दास, विधायक पूरण सिंह फर्त्याण, बहन हेमा पुरोहित, ब्र.कु. मंजू, ब्र.कु. प्रेमलता तथा अन्य गणमान्य लोग।

दिल्ली-दिलशाद गार्डन। विश्व पर्यावरण दिवस पर कार्यक्रम के दौरान पौधारोपण करते हुए नवनिर्वाचित काउंसलर, म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन के बी.एस. पनवर, ब्र.कु. बहनें तथा भाई।

हाथरस-उ.प्र.। 'पत्रकारिता सम्मेलन' का दीप प्रज्वलित कर उद्‌घाटन करते हुए डॉ. एम.पी. सिंह, ए.एस.पी. डॉ. अरविंद कुमार, पी.टी.आई. संवाददाता डॉ. गुरूदत्त भारती, जिला सूचनाधिकारी यतीश चन्द्र गुप्ता, ब्र.कु. कैप्टन अहसान सिंह तथा ब्र.कु. शान्ता।

टोंक-राज.। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित 'राजयोग से सम्पूर्ण स्वास्थ्य की प्राप्ति' कार्यक्रम में मंचासीन हैं ब्र.कु. कृष्णा बहन, नगर परिषद की सभापति लक्ष्मी जैन, जिला परिषद के मुख्य कार्यकारी अधिकारी ओ.पी. जागिड़, भाजपा प्रवक्ता ओमप्रकाश गुप्ता तथा अन्य।

जयपुर-बापूनगर। योग दिवस के अवसर पर उत्तर-पश्चिम रेलवे जयपुर में सभी को राजयोग के द्वारा तन व मन को स्वस्थ रखने की विधि बताने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. पदमा।

हज़ारीबाग-झारखण्ड। कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंधन अभिकरण में पदाधिकारियों को 'स्ट्रेस मैनेजमेंट' का कोर्स कराने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. हर्षा तथा ब्र.कु. तृप्ति।

भादरा-राज.। माननीय मुख्यमंत्री वसुन्धरा राजे को मुलाकात के दौरान गुलदस्ता भेंट करते हुए ब्र.कु. चन्द्रकान्ता। साथ हैं ब्र.कु. मीना तथा अन्य।

भवानीगढ़-पंजाब। ज्ञानचर्चा के पश्चात् समूह चित्र में विधायक विजेन्द्र सिंगला, प्रसिद्ध मुनि निराले बाबा जी, ब्र.कु. राजिन्दर बहन, ब्र.कु. निशा तथा अन्य।

अलीगढ़-उ.प्र.। ब्रह्माकुमारी पाठशाला में आयोजित 'कर्मों का ऑडिट' कार्यक्रम में चार्टर्ड एकाउन्टेंट्स एसोसिएशन के अध्यक्ष अवन कुमार सिंह को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. कमलेश तथा ब्र.कु. छोटे लाल,माउण्ट आबू। साथ हैं अलीगढ़ मण्डल के आयकर आयुक्त सुनील वाजपेयी, एडवोकेट मुकेश शर्मा तथा अन्य।

भंगरोटू-मण्डी(हि.प्र.)। सेवाकेन्द्र की 21वीं वर्षगांठ पर आयोजित शोभायात्रा को शिवध्वज दिखाकर रवाना करते हुए व्यापार मण्डल के प्रधान अमृतपाल जी, ब्र.कु. अमीर चन्द, ब्र.कु. शीला तथा ब्र.कु. भाई बहनें।

फिल्लौर-पंजाब। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर नवयुग संस्था द्वारा आयोजित कार्यक्रम में ब्र.कु. तुलसी का स्वागत करते हुए संस्था के सदस्य।

भवानीमण्डी-पंजाब। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए शिव शंकर सोनी,आयुर्वेदिक चिकित्सक, प्रमोद कुमार, कानुनगो, ब्र.कु. निशा, ब्र.कु. गायत्री तथा अन्य।

स्व+तंत्र

मनुष्य का जीवन प्राचीन काल से ही स्वतंत्र रहा है। मानवता कभी भी परतंत्रता को स्वीकार नहीं करती है। ये हम सभी का स्वयं का अनुभव भी है। लेकिन हमारी स्वयं की उलझनें, स्वयं के प्रति हमारा स्वयं का दृष्टिकोण हमें उन परतंत्रता की जंजीरों में जकड़ रहा है जो कहीं न कहीं हमारी स्वयं की खुशी और स्वतंत्रता को गायब कर रही है। विकारों की बेड़ियाँ हमारे जीवन को ऐसे बांधे हुए हैं, कि कोई भी आंतरिक व बाह्य औजार उसे खोल नहीं पा रहा है।

मनुष्य का शरीर पंचतत्वों से निर्मित है। इन पंचतत्वों में पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश के मिलने से पहले हमारे अंदर पृथ्वी का सबसे सूक्ष्मतम कण जिसे हम परमाणु कहते हैं, दो या दो से अधिक परमाणुओं के मिलने से अणु बनता है। अणु जब अपनी क्रियाशीलता में आता है, तो वो एक मिश्रण के रूप में हमारे शरीर में काम करता है। मिश्रण से कोशिकाओं का निर्माण होता है। इन कोशिकाओं के सम्मिलन से हमारे उत्तक (टिसूज़) बनते हैं। इन उत्तकों के एक साथ सम्मिलन से अंग बनता है, और इन अंगों के सम्मिलन से तंत्र का निर्माण होता है। हमारे शरीर में सात तंत्र हैं, जिसमें क्रमश: कंकाल तंत्र, श्वसन तंत्र, परिसंचरण तंत्र आदि आदि हैं। इन तंत्रों का संतुलन हमारे शरीर के सबसे ऊपरी हिस्से मस्तिष्क के द्वारा होता है, या जिसे हम कंट्रोल रूम भी कह सकते हैं, वहाँ से होता है। अगर उसमें से एक भी न्यूरॉन, एक भी सेल, एक भी टिसू इधर उधर हो जाए तो शरीर में कोई न कोई हलचल शुरू हो जाती है। मनुष्य हमेशा इस बात से अनभिज्ञ रहता है कि हम कैसे बीमार हो जाते हैं। क्योंकि मस्तिष्क को भी चलाने वाली शक्ति जो तीन ग्लैंड के बीच में स्थित है, जिसको हम मेटा फिज़िकल एनर्जी या पराभौतिक ऊर्जा कहते हैं, उसके द्वारा होता है। दरअसल वही 'स्व' है, जिसको स्व कहो या ऊर्जा कहो या आत्मा कहो, या रूह कहो, स्व वही है। वही स्व इस तंत्र को चलाती है अपने विचार शक्ति के माध्यम से।

उदाहरण के रूप में जैसे हमारा लोकतंत्र है, जो मुख्य नियंत्रक है हमारे देश के विधान का, कानून का, समाज का, राज्य का, लेकिन वो कार्य अच्छी तरह से तभी कर सकता है जब राज्य के प्रतिनिधि अच्छी तरह से अपनी एक-एक ज़िम्मेवारियों को निभायें और उसकी सारी सूचना मुख्य नियंत्रक को दें, तभी व्यवस्था सुचारू रूप से चल सकती है या आगे बढ़ सकती है। वैसे ही हमारे शरीर का तंत्र है, जिसमें आत्मा मुख्य है, या स्व मुख्य है। उसके साथ सम्मिलित शक्तियों में मन बुद्धि संस्कार है। अगर ये तीनों सही रूप से कार्य करते हैं, और उसकी सूचना आत्मा को पहुँचती है, या स्व को पहुँचती है तो वो अच्छी तरह से अपने तंत्र को नियंत्रण में रख सकता है। लेकिन सहयोगियों अर्थात मन बुद्धि संस्कार के अंदर कुछ बाहरी शक्तियों ने आक्रमण कर दिया है, जिसे हम कहते हैं विकार। ये हमारे इंद्रिय रूपी दलालों के माध्यम से हमारे राज्य में प्रवेश करते हैं, और धीरे-धीरे अपना तबका खुद उस राज्य के ऊपर करते जाते हैं। जैसे आकर्षण, बाहरी दिखावा, लोभ, लालच, मोह आदि आदि घुसपैठिये हमारे अंदर इंद्रियों के माध्यम से आते रहे, और हम उसकी जंजीरों में जकड़ते चले गए। आज आलम यह है कि हमारा जो स्व है या आत्मा है, वो पूरी तरह से तंत्र के वशीभूत है, इसका मतलब है कि मन बुद्धि संस्कार के वश हम सभी आज इतने ज़्यादा हैं कि हमसे गलत काम ही हो रहे हैं। इस चंगुल से छूटने के लिए हम सभी को कोई रास्ता नहीं दिखाई दे रहा है। कोई ऐसा देशभक्त, क्रान्तिकारी पैदा हो, जो हमें इन विकारों से छुड़ा दे, इनसे हमें आज़ाद करा दे। आपको यह जानकर खुशी तो होती ही है कि भारत पंद्रह अगस्त 1947 को आज़ाद हुआ, लेकिन भारत में रहने वाले लोग क्या आज़ाद हैं! हमें तो शायद नहीं लगता। हम सभी 70वीं स्वतंत्रता दिवस के वर्षगांठ की ओर बढ़ रहे हैं। इतने सालों का अनुभव लेने के बावजूद भी हम बदले नहीं, बदला लेने के चक्कर में रहते हैं।

इस उहापोह के दौर में एक महापरिवर्तक, विश्व रक्षक भी 1937 में इस धरा पर आया, और अभी भी है, जो अहिंसक है, परम कल्याणकारी है, परम हितैषी है, जो जातिवाद, धर्मवाद सबसे परे है। जो सच्ची स्वतंत्रता दिलाने हेतु प्रयासरत है। स्थूल देश की स्वतंत्रता को 70 साल हुए और परमात्मा को आये हुए 80 वर्ष हो चुक हैं। वो हमारे अंदर घुसे हुए घुसपैठिये काम क्रोध लोभ मोह अहंकार को निकालने हेतु निरंतर प्रयासरत हैं। वो हमारे लिए स्व की आज़ादी को लाने हेतु निमित्त हैं। हम जब तक इस परम रक्षक के सानिध्य में नहीं आ जाते, तब तक अपने आप को उन जंजीरों से छुड़ा नहीं सकते। स्वतंत्रता तो सच में वो है, जिसमें हमें हमारे मन से, तन से, धन से, जन से सबसे सहयोग मिले, कोई बंधन न हो। लेकिन आज हम बंधनमुक्त नहीं हैं, बल्कि पूरी तरह से बंधनयुक्त हैं। हमारा पिता हमें इस बंधन से मुक्त करने के लिए सज्ज है। बस हमें उसके सामने आना है, खड़ा होना है और समर्पण करना है सबकुछ। उसके बाद हम सभी सच्ची स्वतंत्रता को महसूस कर पायेंगे। इस जीवन में रहते हुए भी जीवनबंध से जीवनमुक्ति की तरह बढ़ जायेंगे। तो आओ इस दिवस को प्रत्यक्ष रूप से अनुभव करने का बीड़ा उठायें।

सद्भावना से सर्व... - पेज 12 का शेष

उत्थान के लिए मेहनतकर्ता किसानों को आधुनिकता व आध्यात्मिकता का समन्वय रखना आवश्यक है। इस क्षेत्र में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा किया जा रहा भागीरथी कार्य एक खुली किताब की तरह है।

कृषि और ग्राम विकास प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका ब्र.कु. तृप्ति बहन ने कहा कि आज इस विश्व में सद्भावना की अनिवार्यता है।

कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग के उपाध्यक्ष ब्र.कु. राजू ने आये हुए सभी मेहमानों का हार्दिक स्वागत किया।

संगठन के कार्यकारी सचिव ब्र.कु. मृत्युंजय ने कहा कि किसान के मन में संकल्प रूपी बीज सकारात्मक हो, तो अनाज भी शक्ति प्रदान करने वाला होता है। जैविक खादों के प्रयोग से अनाज की पौष्टिकता भी उच्च गुणवत्ता वाली होती है।

वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका ब्र.कु. सुषमा ने कहा कि समाज के हर तबके को मानसिक शान्ति व शक्ति प्राप्त करने के लिए राजयोग का अभ्यास करने की ज़रूरत है। राजयोग मनोबल को बढ़ाने में सहायक है।

वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका ब्र.कु. गीता ने कहा कि गांव के सर्वांगीण विकास के लिए ग्राम वासियों को एकता के साथ आपसी सद्भाव, प्रेम, सुख, शान्ति आदि मूल्यों को महत्व देना चाहिए।

दिल्ली मजलिस पार्क से आई कृषि और ग्राम विकास प्रभाग की क्षेत्रीय संयोजिका ब्र.कु. राजकुमारी बहन ने कहा कि निर्माण के लिए मन की भावना को शुद्ध और श्रेष्ठ बना लें। शुद्ध मन से सारी दुनिया को अपनी शुभ भावना प्रदान करें।

कार्यक्रम में प्रभाग के अधिशासी सदस्य ब्र.कु. राजेन्द्र, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. किरण आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किये। ब्र.कु. सुनीता बहन ने सभी का आभार व्यक्त किया। ब्र.कु. सपना ने मंच का संचालन किया।

परम रक्षक से बंधवायें रक्षासूत्र

राखी का त्यौहार जब आने वाला होता है, तो हम सभी इस त्यौहार के प्रति, इस पवित्र बंधन के प्रति बहुत निर्मल भाव से इंतज़ार कर रहे होते हैं। इस त्यौहार की महिमा इतनी क्यों है, क्या यह सिर्फ भाई बहन के बीच पवित्र रिश्ते को उजागर करता है, या इसका गुह्य बात से कोई जुड़ाव है? तो हम उस गुह्य रहस्य की ओर बढ़ते हैं और समझते हैं रक्षासूत्र का रहस्य....

हरेक बहन अपने भाई को रक्षाबंधन के दिन रक्षासूत्र बांधती है और कहती है कि हर मुसीबत की घड़ी में उसका भाई उसकी रक्षा करे, ऐसी अपेक्षा रखती है। लेकिन अगर हम इस पूरे दृश्य को अपने सामने लायें तो कई बार देखने में आता है कि बहन जिस भाई को रक्षासूत्र बांधती है वो उसकी उम्र से छोटा होता है। अगर इसको वैज्ञानिक रूप से देखा जाये तो छोटा भाई अपनी बड़ी बहन की रक्षा कैसे करेगा? अगर वो छोटी आयु का है, दुर्बल है, गरीब है, या दूर है, तो वो धन से, तन से अपने बहन की रक्षा करने में असक्षम है, असमर्थ है, है या नहीं! क्या आज के इस दौर में कोई भी पूरी तरह से अपने भाई को लेकर सुरक्षित है, या सुरक्षित महसूस करता है? हमारे हिसाब से तो नहीं। तो ऐसा क्या किया जाए कि हर कोई अपने आप को सुरक्षित महसूस करे और हर समय उसे ये गैरंटी भी मिले कि उसका रक्षक उसके पास पहुँच ही जायेगा।

इस दुनिया में अगर कभी किसी के ऊपर मुसीबत आती है तो वो सिर्फ एक ही सहारा ढूंढता है, जिसको हम भगवान कहते हैं, उसकी निगाह उसकी तरफ ही जाती है। वो उसे ही अपना सबकुछ मानकर उसी के ऊपर सबकुछ छोड़कर अपना कार्य करता है। लेकिन परमात्मा भी कई सारे शर्तों में बंधा हुआ है, वो बिना शर्त किसी को कुछ भी नहीं देता है। आप भी शायद अपने सम्बंधियों से यही अपेक्षा रखते हैं कि अगर वो ठीक हैं, सही मार्ग पर हैं, हमेशा चाल-चलन व्यवहार सब ठीक है तो वे सबकुछ करने को तैयार हैं। ऐसे ही परमात्मा उनकी रक्षा करने के लिए हमेशा बाध्य है, जो पवित्रता के

आधार से अपने जीवन को संवारते हैं। रक्षाबंधन विशेष रूप से पवित्रता का बंधन है। पवित्रता अर्थात् श्रेष्ठ कर्म, सुखदायी कर्म आदि से सबके जीवन को महका देना, या सुखदायी बना देना और उन कर्मों से दुआयें कमाना। तो सबसे पहले अपने आपको हमें चेक करना है, कि हम कितने पवित्र हैं, कितने श्रेष्ठ कर्म कर रहे हैं, कितना सबको सुख दे रहे हैं, नि:स्वार्थ भाव से सेवा कर रहे हैं, उसके आधार से वो परमरक्षक आपको सबकुछ देने के लिए बाध्य हो जाये।

रक्षाबंधन के पावन पर्व पर हम उस परमरक्षक के हाथों से अगर सच में रक्षासूत्र बंधवाना चाहते हैं, तो हमें सर्वप्रथम पवित्रता को अपने जीवन में अपनाना होगा। पवित्रता अर्थात् सच्चाई सफाई ईमानदारी से अपने को सम्पूर्ण रीति से समर्पित करना परमात्मा के प्रति। एक बार पवित्र बनने की प्रतिज्ञा लेने के बाद उसे भूल से भी न तोड़ना, उसका सम्पूर्ण विश्वास पात्र बनना, जिससे वो आपकी तरफ स्वयं ही आकर्षित हो जाये। दरअसल ये बात किसी पुरुष या स्त्री के लिए नहीं है, भाई या बहन के लिए नहीं है, ये बात सर्व आत्माओं के लिए है। सर्व आत्माओं हेतु है। रक्षा करने के लिए बाध्य करना बहुत सहज है, लेकिन पवित्रता को धारण करना आज लोगों को मुश्किल लगता है। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में परमात्मा का सानिध्य लेने हेतु बहुत सहज विधि सिखाई जाती है। जिसको हम सहज राजयोग कहते हैं। इस राजयोग के माध्यम से हम अपनी पवित्रता को कायम रख सकते हैं। निरंतर जागृत अवस्था में हमें ये राजयोग रखता है। बीच बीच में जब हम कभी भूल जाते हैं, तो परमात्मा द्वारा पुन: पुन: ज्ञान वर्षा से फिर से चैतन्य अवस्था को प्राप्त कर जाते हैं। वो अपने सुंदर और शक्तिशाली महावाक्यों से हमें याद दिलाता है कि आपने हमसे पवित्रता की प्रतिज्ञा की थी, आप भूल तो नहीं गये। ऐसी बातें अगर भगवान आपसे करे तो कैसा लगता है! इसलिए उस पवित्रता को याद दिलाने के कारण ही हम सभी ब्रह्मावत्स आज इतने वर्षों से उस परम रक्षक का रक्षा कवच पहनकर तीव्र गति से आगे बढ़ रहे हैं, और पूरे विश्व को उस परम रक्षक से जुड़वाने की भी कोशिश कर रहे हैं। क्या आप हमारे साथ इसमें सहयोगी बनने के लिए सज्ज नहीं हैं? क्या आप हमारे साथ कदम से कदम मिलाकर रक्षा दिवस को सार्थक करने के लिए, परमात्मा से रक्षासूत्र बंधवाकर अपने जीवन को पूर्णतया सुरक्षित करने में सहयोग नहीं देंगे क्या? तो आइये, एक पवित्र बंधन बांधने के लिए हम सभी एक साथ एकजुट होकर इस अभियान में अपनी अंगुली दें।

'गणेश' और हमारा... - पेज 2 का शेष

तर्क को कुतर-कुतर करने के लिए स्वच्छन्द नहीं छोड़ देते। उनका वाहन चूहा विवेक की अविवेक पर विजय का सूचक है।

चूहा चुपके से ही बिल बनाते-बनाते घर में आ जाता है और छिपकर अथवा अन्धेरे में कुतरने का काम करता रहता है। ऐसे ही संशय अथवा अविवेक भी अज्ञान अंधकार में आकर बिल में छिपने की तरह अप्रत्यक्ष रूप में अपना काम करना शुरू कर देता है और मनुष्य के ज्ञान की जड़ें खोखली कर देता है। मनुष्य को चाहिए कि संशय की प्रवृत्ति पर काबू पाये।

बुद्धि और सिद्धि अथवा विधि और सिद्धि

गणेश जी के दोनों ओर बुद्धि और सिद्धि नामक उनकी दो पत्नियाँ दिखाई जाती हैं। ये भी क्रमश: ज्ञान और उस द्वारा होने वाली सफलता की प्रतीक हैं। जो बुद्धिवान होगा अर्थात् सोच-समझकर कार्य करेगा, दूरदर्शिता का प्रयोग करेगा, उसको सिद्धि अथवा सफलता तो होगी ही। सफलता तो ज्ञानवान व्यक्ति का जन्म सिद्ध अधिकार है।

कई बार गणेश जी के चित्रों में उनके साथ केला फल भी चित्रित किया जाता है, साथ ही लक्ष्मी को भी। केले के पौधे की यह विशेषता है कि उसके ऊपर के पत्ते को हटायें तो उसके नीचे और पत्ता निकल आता है। यदि उसको हटायें तो उसके नीचे एक और पत्ता सामने आ जाता है। अपनी इस विशेषता के कारण केला इस बात का सूचक है कि ज्ञानवान व्यक्ति की बातों में गहराई होती है। उसकी गहराई में जायें तो इसमें एक और बात छिपी होती है। इस बात को देखकर किसी कवि ने कहा है- जैसे केले के पात-पात में पात। तैसे ज्ञानी की बात-बात में बात। अत: गणपति के साथ केला को चित्रित करने के पीछे ये भाव होता है कि ज्ञानवान व्यक्ति की बातों में बहुत गहराई होती है।

'लक्ष्मी' शब्द 'लक्ष्य' शब्द से बना है। लक्ष्मी को सदा कमल पर बैठे या खड़े दिखाया जाता है। यहाँ तक कि उसके नामों में से एक नाम कमला भी है। लक्ष्मी वैकुण्ठ के राज्य-भाग्य की परिचायिका है। वो पवित्रता, सुख और शान्ति का मूर्त रूप है, क्योंकि ज्ञानवान व्यक्ति के जीवन का लक्ष्य भी सम्पूर्ण पवित्रता व शान्ति के जीवन की प्राप्ति करना अथवा कमल पुष्प समान बनना अर्थात् स्वर्ग का सुखकारी स्वराज्य प्राप्त करना होता है। इसलिए गणपति के साथ लक्ष्मी को दिखाना स्वाभाविक है। ऐसे तो गणपति का आध्यात्मिक रहस्य और भी है, लेकिन इन सबको यहाँ स्पष्ट करना सम्भव नहीं है।

मुम्बई। न्यू यॉर्क के युनाइटेड नेशन्स हेडक्वार्टर्स में यू.एन. द्वारा ब्रह्माकुमारीज़ की अति.मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी को उनके राष्ट्र के प्रति उत्कृष्ट सेवाओं तथा आउटस्टैंडिंग इंडिविज्युअल एचीवमेंट्स के लिए 'भारत गौरव अवॉर्ड' से नवाज़ा गया। दादी की अस्वस्थता के कारण ब्र.कु. भूमिका ने यह अवॉर्ड प्राप्त किया तथा मुम्बई में यह अवॉर्ड दादी को प्रदान किया गया।

भीलवाड़ा-राज.। मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष जस्टिस प्रकाश टाटिया को ब्रह्माकुमारीज़ मुख्यालय माउंट आबू में होने वाले ज्युरिस्ट कॉफ्रेन्स का निमंत्रण देते हुए ब्र.कु. इन्द्रा। साथ हैं ब्र.कु. बालमुकुन्द तथा ब्र.कु. अमोलक।

कोलकाता। टीटागढ़ ईद मिलन कमेटी द्वारा आयोजित ईद मिलन कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. कमला। मंचासीन हैं विधायक मधुसूदन घोष, बौद्धी वेन रतन ज्योति महस्तवीर, फादर अरविंद मण्डल, श्री स्वामी नत्य रूपा नंद महाराज, मौलाना शाहिद हुसैन मिसबाही, सरदार गुरूमुख सिंह गांधी व रबिंदर सिंह, किशोर जैन तथा संत निराकारी आनंद प्रकाश त्रिपाठी बाबा।

सादाबाद-उ.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा श्री कृष्णा गार्डन में आयोजित 'विशाल किसान महासम्मेलन' के दौरान दीप प्रज्वलित करते हुए जिला कृषि अधिकारी विपिन कुमार, पूर्व कृषि अधिकारी ब्र.कु. प्रहलाद, ब्र.कु. सुमंत, ब्र.कु. सीता, ब्र.कु. भावना, ब्र.कु. बबिता,राज. तथा अन्य।

जालोर-राज.। ब्र.कु. मिन्नती, ब्र.कु. पावनी तथा ब्र.कु. सुनीता के दिव्य समर्पण समारोह के अवसर पर उनके साथ उपस्थित हैं राजयोगिनी ब्र.कु. शीलू,माउण्ट आबू, राजयोगी ब्र.कु. भूपाल,माउण्ट आबू, रघुनाथ जी भारती, ब्र.कु. अरुणा तथा अन्य।

मुंगेर-बिहार। गुरू पूर्णिमा के दिन कार्यक्रम के दौरान भोग लगाते हुए मध्य में ब्र.कु. मनीषा। साथ हैं ब्र.कु. रेणु तथा ब्र.कु. नम्रता।

वाराणसी-उ.प्र. । नीलकंठ तिवारी,स्टेट मिनिस्टर फॉर यूथ अफेयर्स,स्पोर्ट्स,लॉ एंड जस्टिस के साथ आध्यात्मिक चर्चा करते हुए ब्र.कु. विपिन तथा अन्य।

अजमेर-राज. । सेवाकेन्द्र के अवलोकन के दौरान महिला एवं बाल विकास मंत्री अनिता भदेल को आर्ट गैलरी दिखाते हुए एवं ईश्वरीय संदेश देते हुए ब्र.कु. अंकिता।

रोहड़ू-हि.प्र. । राज्य स्तरीय मेले में एस.डी.एम. घनश्याम दास शर्मा को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. रीता।

राजसमंद-राज. । मूल्यनिष्ठ समाज के निर्माण हेतु अपने विचार व्यक्त करते हुए ब्र.कु. रीटा। साथ हैं जिला कलेक्टर प्रेमचन्द जी तथा ब्र.कु. पूनम।

मण्डी-गोविंदगढ़(पंजाब) । योग दिवस के कार्यक्रम में योगा ट्रेनर पिंकी गुप्ता को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. साक्षी।

वागवेड़ा-झारखण्ड । सरस्वती शिशु मंदिर स्कूल में 'पर्सनालिटी डेवलपमेंट' कार्यक्रम के दौरान बच्चों को सम्बोधित करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. अंजू।

आसक्ति की समाप्ति से ही शांति की प्राप्ति

गतांक से आगे...

परमात्मा ने चार विकल्प दिए हैं। अगर तुम मेरे में मन को एकाग्र नहीं कर सको तो योगाभ्यास करो। खास बैठक लगा करके अभ्यास करो। जितनी शारीरिक एकाग्रता होगी उतनी मन की एकाग्रता को लाना सहज हो जाएगा। अगर बैठकर भी करना मुश्किल है, तो सेवा करो- यज्ञ सेवा। अर्थात् अनेक आत्माओं को जीवन शुद्ध बनाने की प्रेरणा देना, ये सबसे बड़ी सेवा है। किसी को आत्म उन्नति का मार्ग बताना, ये सबसे बड़ी सेवा है। ये सेवा कर्म करो। उसके लिये समय निकालो। वो भी अगर नहीं कर सके तो मन, बुद्धि को एकाग्र कर आत्म स्थिति में स्थित हो जाओ। ये चार विकल्प बतायें हैं परमात्मा ने। इनमें जो भी सहज हो। लेकिन निराकार की ही आराधना, उपासना करने की प्रेरणा दी है।

फिर कहा कि अभ्यास से ज्ञान श्रेष्ठ है। इसलिए ज्ञान को समझो। ज्ञान से ध्यान श्रेष्ठ है और ध्यान से सर्व कर्म फल का त्याग श्रेष्ठ है। जो कर्म करो उसे भूल जाओ। समर्पण कर दो ईश्वर को अर्पण कर दो, ये फल भी तुम्हें अर्पण। जो फल इसका मिलना है वो भी उसको अर्पण कर दो। कर्म फल के त्याग से तत्काल ही शांति प्राप्त हो जाती है। आसक्ति खत्म हो गयी तो मन शांत हो जाता है।

फिर भगवान ने प्रिय आत्मा के लक्षण बताए कि जो किसी से द्वेष नहीं करता और सर्व के प्रति मित्रता भाव रख कृपालू है, वह भगवान को प्रिय है। जो ममत्व बुद्धि और अहंकार रहित है, वह आत्मा भगवान को प्रिय है। जो सदा संतुष्ट, दृढ़ और संयमी है। वह भगवान को अति प्रिय आत्मा है। जो समर्पण बुद्धि है और कर्मयोगी है, वह भगवान को प्रिय है। जो न स्वयं क्रोध करता है और न किसी को क्रोधित करता है वह प्रिय है। जो ईर्ष्या, भय और विषाद इन दुर्गुणों से अलिप्त है, वही भगवान को अति प्रिय है। जो निरपेक्ष, पवित्र और दृढ़ सकंल्पधारी है, वह भगवान को अतिप्रिय है। पुरुषार्थ में दृढ़ सकंल्पधारी तो बनना ही है, साथ ही पवित्र मन की भावनाओं को भी रखना ही है। जो न अति हर्ष और न शोक, न कभी कोई बात में इच्छा रखता है, वह भगवान को अतिप्रिय है। जो कर्म में शुभ और अशुभ का त्यागी है, वो भगवान को अतिप्रिय है। जो शत्रु, मित्र, मान, अपमान, सुख-दु:ख, निंदा-स्तुति में समान एवं क्षमाशील है, वह भगवान को अतिप्रिय है। जो अनासक्त मितभाषी और दूषित संगति से सदैव मुक्त है, वह भगवान को अतिप्रिय है। जो धर्ममय अमृत पथ का श्रद्धा से अनुसरण करते हैं वह भगवान को अतिप्रिय हैं। इतने लक्षण वाले भगवान को अतिप्रिय लगते हैं। इसलिए कर्मयोगी माना इन लक्षणों को जितना हो सके, उतना अपने जीवन में विकसित करते जाए। अपने आपको भगवान के प्रिय बनाते चल।

-ब्र.कु. उषा,वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

इस प्रकार बारहवें अध्याय में परमात्मा ने अपने प्रिय अर्जुन के प्रश्नों के उत्तर दिये।

साकार भक्ति श्रेष्ठ से निराकार भक्ति श्रेष्ठ है। फिर भगवान की प्रिय आत्मा के लक्षण बताए हैं। उन लक्षणों के आधार पर कैसे हर संघर्ष में विजयी बनना है। ये प्रेरणा दी है। अब अपने मन को बाह्य सभी बातों से समेट लें। योगाभ्यास के लिए अपने मन को शुद्ध संकल्प देते जायेंगे, दृढ़तापूर्वक बैठेंगे, जितनी शारीरिक एकाग्रता को हम बना सकते हैं, उतनी मन की एकाग्रता को ले आना सहज और स्वाभाविक होगा। इसलिए दृढ़ता पूर्वक अभ्यास करें। साथ ही साथ मन को परमात्मा की स्मृति में ले चलते हैं। अपने मन को शुद्ध संकल्प देते चलें। अंतर्चक्षु, धीरे-धीरे खुलता जा रहा है। परमात्मा के दिव्य स्वरूप को हम सभी ने जान लिया समझ लिया है। अब उस अंर्तचक्षु के सामने परमात्मा के दिव्य स्वरूप पर, हम अपने मन और बुद्धि को एकाग्र करेंगे।

- क्रमश:

ख़्यालों के आईने में...

मन और मकान को वक्त वक्त पर साफ करना बहुत ज़रूरी है, क्योंकि मकान में बेमतलब सामान और मन में बेमतलब गलतफहमियाँ भर जाती हैं।

यदि हम गुलाब की तरह खिलना चाहते हैं, तो काँटों के साथ तालमेल की कला सीखनी होगी।

तालाब एक ही है, उसी तालाब में हंस मोती चुनता है और बगुला मछली। सोच-सोच का फर्क होता है। आपकी सोच ही आपको बड़ा बनाती है।।

आवश्यक सूचना

एस.एल.एम. ग्लोबल नर्सिंग कॉलेज/ग्लोबल हॉस्पिटल स्कूल ऑफ नर्सिंग के लिए 4 बी.के. किचन असिस्टेंट की अतिशीघ्र आवश्यकता है।

योग्यता : हाई स्कूल

कार्यानुभव : कम से कम 2 वर्ष का कुकिंग एक्सपीरियंस

संपर्क करें : एस.एल.एम. ग्लोबल नर्सिंग कॉलेज/ग्लोबल हॉस्पिटल स्कूल ऑफ नर्सिंग, शिवमणि होम के पास, तलहटी, आबू रोड

मो. : 8432403244/94141413717

ई. मेल : nntagrawal@gmail.com

मन की ख़ुशी और सच्ची शांति के लिए देखें आपका अपना 'पीस ऑफ माइंड चैनल'

सूचना : अगस्त 2017 से ओमशान्ति मीडिया पत्रिका की सदस्यता शुल्क में मामूली सी बढ़ोत्तरी की गई है जो कि वार्षिक शुल्क 200 और तीन वर्ष का 600 किया गया है।

ओमशान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें

कार्यालय- ओमशान्ति मीडिया, संपादक- ब्र.कु.गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़, शान्तिवन, तलहटी, पोस्ट बॉक्स न.- 5, आबू रोड (राज.)- 307510. सदस्यता के लिए सम्पर्क- M - 9414006096, 9414182088,
Email- omshantimedia@bkivv.org,
mediabkm@gmail.com,
Website- www.omshantimedia.info

सदस्यता शुल्क: भारत - वार्षिक 200 रुपये, तीन वर्ष 600 रुपये, आजीवन 4500 रुपये । विदेश - 2500 रुपये (वार्षिक) कृपया सदस्यता शुल्क 'ओमशान्ति मीडिया' के नाम मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेएबल एट शान्तिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।

कथा सरिता

पुरुषार्थ ही सर्वोपरि

विंध्याचल प्रदेश के राजा के दरबार में तीन व्यापारी अपनी फरियाद लेकर उपस्थित हुए और बोले-''महाराज! हम आपके राज्य में व्यापार करने आ रहे थे कि हमें मार्ग में डाकुओं ने लूट लिया। हमारे पास लेशमात्र भी धन नहीं है। कृप्या हमारी मदद कीजिए।'' राजा ने उन तीनों को एक-एक बोरी गेहूँ देने का आदेश दिया। गेहूँ देते समय राजा बोले - ''इस बोरी के गेहूँ को स्वयं ही साफ करना और स्वयं ही उपयोग में लाना। न किसी को देना, न किसी की मदद लेना। एक माह बाद मुझसे पुन: मिलना।'' बोरी लेकर तीनों व्यापारी चले गए। उनमें से दो व्यापारी आलसी थे, तो उन्होंने गेहूँ साफ करने का श्रम न करते हुए उसे बेच दिया। तीसरा व्यापारी परिश्रमी था, उसने गेहूँ साफ करना शुरू किया तो उसे बोरी में नीचे एक अनगढ़ हीरा मिला। उसने उसे तराशकर अपने पास रख लिया। एक माह बाद तीनों व्यापारी राजा के समक्ष हाज़िर हुए तो आलसी व्यापारियों ने राजा से पुन: धन की मांग की, परंतु तीसरे व्यापारी ने तराशा हुआ हीरा राजा को भेंट किया। राजा बोले-''यह तुम्हारा ही है। इसे बेचकर नया कारोबार आरंभ करो।'' इसके बाद राजा दूसरे व्यापारियों से बोले - ''ऐसे ही रत्न तुम्हारी बोरियों में भी थे, परंतु श्रम का अनादर करने के कारण तुम उससे वंचित रह गए।'' सत्य यही है कि पुरूषार्थ के अभाव में मनुष्य दीन–हीन बना रहता है।

जीवन जीने का मूलमंत्र

महात्मा बुद्ध ने अपने शिष्यों को उपदेश देते हुए कहा - '' देश में अकाल पड़ा है। लोग अन्न एवं वस्त्र के लिए तरस रहे हैं। उनकी सहायता करना हर मनुष्य का धर्म है। आप लोगों के शरीर पर जो वस्त्र हैं, उन्हें दान में दे दें।'' यह सुनकर अनेक लोग उठ गए, पर उन शिष्यों में से एक निरंजन वहीं बैठा रहा। उसने सोचा कि मेरे शरीर पर तो एक ही वस्त्र है। इसे दे दूंगा तो नग्न होना पड़ेगा। फिर उसने सोचा कि मनुष्य बिना वस्त्र के पैदा होता है और बिना वस्त्र के चला जाता है। यह सोचते ही उसने अपना उत्तरीय - धोती उतारकर महात्मा बुद्ध के चरणों में डाल दिया। महात्मा बुद्ध ने निरंजन से पूछा - '' पुत्र! तुम्हें अपने वस्त्र देने में कष्ट तो नहीं हुआ?'' निरंजन ने उत्तर दिया- ''महात्मन! थोड़ा कष्ट तो हुआ, पर देने के भाव से जो संतुष्टि मिली, उसने पहले जन्म लिए लोभ का संवरण कर लिया।''

महात्मा बुद्ध बोले- '' एक वस्त्र के त्याग ने तुम्हारे मन में संतुष्टि को जन्म दिया तो सोचो यदि सर्वस्व प्रभु को अर्पित कर दोगे तो कितनी गहन संतुष्टि जन्म लेगी।'' निरंजन को जीवन जीने का मूलमंत्र मिल गया था।

परमात्म कृपा का सदुपयोग

एक राजा का जन्म दिन था । सुबह जब वह घूमने निकला तो उसने तय किया कि वह रास्ते में मिलने वाले सबसे पहले व्यक्ति को आज पूरी तरह से खुश व सन्तुष्ट करेगा।

उसे एक भिखारी मिला। भिखारी ने राजा से भीख मांगी तो राजा ने भिखारी की तरफ एक तांबे का सिक्का उछाल दिया। सिक्का भिखारी के हाथ सें छूट कर नाली में जा गिरा। भिखारी नाली में हाथ डालकर तांबे का सिक्का ढूंढ़ने लगा।

राजा ने उसे बुलाकर दूसरा तांबे का सिक्का दे दिया। भिखारी ने खुश होकर वह सिक्का अपनी जेब में रख लिया और वापिस जाकर नाली में गिरा सिक्का ढूंढ़ने लगा।

राजा को लगा कि भिखारी बहुत गरीब है। उसने भिखारी को फिर बुलाया और चांदी का एक सिक्का दिया। भिखारी ने राजा की जय-जयकार करते हुए चांदी का सिक्का रख लिया और फिर नाली में तांबे वाला सिक्का ढूंढ़ने लगा ।

राजा ने उसे फिर बुलाया और अब भिखारी को एक सोने का सिक्का दिया। भिखारी खुशी से झूम उठा और वापिस भागकर अपना हाथ नाली की तरफ बढ़ाने लगा।

राजा को बहुत बुरा लगा। उसे खुद से तय की गयी बात याद आ गयी कि 'पहले मिलने वाले व्यक्ति को आज खुश एवं सन्तुष्ट करना है।' उसने भिखारी को फिर से बुलाया और कहा कि मैं तुम्हें अपना आधा राज-पाट देता हूँ। अब तो खुश व सन्तुष्ट हो जाओ ।

भिखारी बोला - 'सरकार ! मैं तो खुश और संतुष्ट तभी हो सकूंगा, जब नाली में गिरा हुआ तांबे का सिक्का भी मुझे मिल जायेगा।'

हमारा हाल भी उस भिखारी जैसा ही है। हमें परमात्मा ने मानव रूपी अनमोल ख़ज़ाना दिया है और हम उसे भूलकर संसार रूपी नाली में तांबे के सिक्के निकालने के लिए जीवन गंवाते जा रहे हैं ।

इस अनमोल मानव जीवन का हम सही इस्तेमाल करें तो हमारा जीवन धन्य हो जायेगा ।

मान क्या और अपमान क्या!

स्वामी रामतीर्थ अमेरिका प्रव्रज्या हेतु पहुँचे हुए थे। उनका उद्बोधन प्रसिद्ध चिंतकों व विचारकों के मध्य हुआ तो सभी ने एक स्वर में उनके अद्भुत व्यक्तित्व एवं प्रकांड पांडित्य की प्रशंसा की। उद्बोधन के पश्चात् वे जिन महिला के घर रुके हुए थे, उनके घर पहुँचे तो उन महिला से बोले - ''बहन! आज ईश्वर ने इस नाचीज़ को अन्यथा ही बहुत प्रशंसा दिलवाई।'' कुछ दिनों उपरांत वे न्यूयॉर्क शहर के ब्रौंक्स क्षेत्र से गुज़र रहे थे कि वहाँ उनकी वेशभूषा को देखकर कुछ अराजक तत्वों की भीड़ लग गई। उनमें से कुछ उन पर छींटाकशी करने लगे तो कुछ ऐसे भी थे, जो अन्यथा ही उनके साथ दुर्व्यवहार करने लगे। घटना की खबर जब महिला को लगी तो वे कुछ साथियों को लेकर स्वामी जी को लेने पहुँचीं। रामतीर्थ उसी निर्विकार भाव से बोले - ''बहन! आप हस्तक्षेप न करो। आज ईश्वर का अपने इस भक्त को अपमान से भेंट कराने का मन है। भगवान के भक्त के लिए मान क्या और अपमान क्या?'' श्रीमद्भगवद्गीता में जिस स्थितप्रज्ञ का वर्णन है, उस स्वरूप का दर्शन उनमें सबको उन क्षणों में हुआ।

शक्ति का प्रयोग विवेकसंगत

श्रुतायुध ने भगवान शिव की तपस्या करके उनसे ऐसी गदा प्राप्त की, जिसका प्रहार त्रिलोक में किसी के लिए सह पाना संभव नहीं था। गदा देते समय भगवान शिव ने श्रुतायुध को आगाह किया कि गदा का उपयोग मात्र सत्कार्यों में किया जा सकता है, यदि व्यक्तिगत राग-द्वेष की पूर्ति के लिए इसका उपयोग हुआ तो यही गदा उसकी मृत्यु का कारण बनेगी। महाभारत के युद्ध में श्रुतायुध को अर्जुन के सामने लड़ने आना पड़ा। श्री कृष्ण को श्रुतायुध की गदा के विषय में ज्ञात था और वे जानते थे कि यदि वह गदा चली तो अर्जुन उस प्रहार को झेल न सकेंगे। अत: श्रीकृष्ण श्रुतायुध को देखकर हँस पड़े। श्रुतायुध को लगा कि संभवतया श्रीकृष्ण उसे कुरूप समझकर उस पर हँस रहे हैं। क्रोध में वह अपना संयम खो बैठा और भगवान शिव की चेतावनी भूल गया। उसने वह गदा श्रीकृष्ण को लक्ष्य कर फेंकी, परंतु गदा ने लौटकर श्रुतायुध का ही वध कर दिया। शक्तियों का उपयोग विवेक-सम्मत तरीके से ही किया जाना चाहिए, अन्यथा दंड का भागी बनना पड़ता है।

करनाल-हरियाणा। पुलिस लाइन में 'नशामुक्ति सेमिनार' के पश्चात् सभी पुलिसकर्मियों को नशा न करने तथा औरों को भी नशे से दूर रखने की प्रेरणा देने की शपथ दिलाते हुए ब्र.कु. डॉ. सचिन परब। साथ हैं ब्र.कु. मेहरचन्द, इंस्पेक्टर रोशन लाल तथा अन्य।

रादौर-हरियाणा। विश्व जनसंख्या दिवस के कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. राज बहन। साथ हैं ब्र.कु. राजू, भाजपा मंडल अध्यक्ष रवि मोदगिल, ब्लॉक मेम्बर विजय कुमार वर्मा, प्रदेश अध्यक्ष संदीप वर्मा तथा ब्र.कु. रमा।

कोलकाता। अंतर्जातीय मादक मुक्ति दिवस के अवसर पर युनिवर्सल दुथ वेलफेयर सोसायटी तथा बंगीय मिलन मंच द्वारा आयोजित कार्यक्रम में आमंत्रित किये जाने पर उपस्थित हैं राजयोगिनी ब्र.कु. किरण, ब्र.कु. पिंकी, वेलफेयर सोसायटी के संपादक मृनाल सरकार, मेडिकल बैंक के कर्णधार डॉ. आशीष तथा कमरहटी म्युनिसिपैलिटी के चेयरमैन गोपाल साह।

समस्तीपुर-बिहार। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. आर.सी. श्रीवास्तव, डी.आर.एम. आर.के. जैन, सुधा डेयरी के एम.डी. डी.के. श्रीवास्तव, ब्र.कु. सविता, पूर्व योजना पदाधिकारी एस.के. वर्मा, कृष्ण भाई तथा अन्य।

डिबरूगढ़-असम। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा इंडिया क्लब,मारवाड़ी पट्टी में आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित हैं डॉ. रतन काटोकी,प्रिन्सीपल,असम मेडिकल कॉलेज,डिबरूगढ़, डॉ. महेश हेमाद्री,माउण्ट आबू, ब्र.कु. बिधान तथा अन्य।

फरीदाबाद से.35। समर कैम्प के समापन अवसर पर प्रतिभागी बच्चों को सर्टिफिकेट देने के पश्चात् समूह चित्र में निगम पार्षद जीतेन्द्र यादव, ब्र.कु. सपना, ब्र.कु. ईश्वर तथा अन्य।

ऊर्जा प्रवाह फॉर्मूला

हम सब कुछ दिनों में ही किसी प्रयोग का परिणाम चाहते हैं। इतनी जल्दी क्यों है आखिर हमें! जो पिछला आपने किया, उसका परिणाम क्या आपको तुरंत मिल गया। उसमें भी तो समय लगा ना। तो जब समय लग रहा है, तो प्रयोग में भी तो समय लगेगा ना, और वो इस बात पर निर्भर करेगा कि प्रयोग करने वाले की फ्रिक्वेंसी क्या है।

ब्र.कु. अनुज,दिल्ली

यह बात आज वैज्ञानिक रूप से सिद्ध की जा चुकी है कि अगर एक साधारण विचार आपके मन में आये, चाहे वो सकारात्मक हो, चाहे वो नकारात्मक, उसका परिणाम तीन से चार महीने में सबके समाने आ ही जाता है। चाहे उस विचार की फ्रिक्वेंसी कम से कम हो। तो अभी जो कुछ भी आपके साथ आज के समय में घटनायें घट रही हैं, या कुछ भी ऊपर-नीचे हो रहा है, तो वो आज का नहीं है। पिछले तीन चार महीने पहले का है, या फिर साल का भी हो सकता है। यहाँ इस बात पर ज़ोर देकर हम उल्लेख करना चाहेंगे कि कोई भी यहाँ पिछले जन्म की बातों को ना जोड़ें तो अच्छा है। इसके पहले हम चाहेंगे कि आप अपने साथ एक प्रयोग करके देख लें कि जब आप भूतकाल की बातें या पास्ट की बातें सोचते हैं तो सोचते कब हैं, वर्तमान में बैठकर ना। क्या वो बात पूर्व जन्म की है, या तो दस दिन पहले की होगी, या बीस दिन, या एक महीना, या तीन महीना, यही ना। तो उस बात को आज ही क्यों आपके पास आना था। क्योंकि पहले आपने कभी ना कभी इसे सोचा है। इसलिए हम बार-बार कह रहे हैं कि पूर्व जन्म की घटनायें तो बहुत दूर की बात है, हम तो अभी की बात कर रहे हैं। इसलिए बहुत ध्यान देने की ज़रूरत है कि आप क्या सोच रहे हैं, किसके बारे में सोच रहे हैं, कितने समय से सोच रहे हैं, वो आने वाले समय में फलीभूत होगा ही। यदि आपने किसी व्यक्ति के साथ गहरा मोह रखा,

उसके साथ गहरा लगाव हो गया, तो चार से छः महीने के अंदर उसकी सारी बीमारियाँ, परिस्थितियाँ, उसके घर की बातें, आर्थिक बातें, सामाजिक बातें, सब आपके पास आ जायेंगी, और ये कोई समझ नहीं पा रहा है। आपको हम बता दें, कि एक फॉर्मूला है कि 'एनर्जी फ्लोज़, व्हेयर योर अटेंशन गोज़', जहाँ हमारा ध्यान गया, वहाँ की सारी ऊर्जा, नकारात्मक या सकारात्मक, सब हमारे पास आ जायेगी, ये निश्चित रूप से संभव है, और यही आम इंसान के साथ हो रहा है। उनको लगता है कि मैंने अभी तक ऐसा तो कोई कर्म नहीं किया। लेकिन अगर किसी व्यक्ति के साथ लगाव है, जुड़ाव है तो उसका सबकुछ आपके पास है। अगर आपको इतिहास की एक घटना पता हो कि हुमायूँ की एक बार तबियत बहुत खराब हुई और सभी हकीमों ने हाथ खड़े कर दिए तो उसके पिता बाबर ने दिल से बैठकर गुहार लगाई कि इसकी सारी बीमारियाँ मुझे लग जाए, और वो उसे लग गई। क्योंकि वो हुमायूँ को ज़िंदा देखना चाहता था, वो उससे बहुत प्यार करता था। ये तो कहानी है, लेकिन प्रत्यक्ष रूप में भी परमात्मा हमें बार-बार अटेंशन दिला रहे हैं कि किसी देह या देह के सम्बंधी के साथ अपना लगाव नहीं रखो, नहीं तो विकर्म या पापकर्म बन जायेंगे और आप इससे कभी निकल नहीं पायेंगे।

उपलब्ध पुस्तकें
जो आपके जीवन को बदल दे

मन की बातें

- राजयोगी ब्र.कु. सूर्य

प्रश्न: भक्त श्रीकृष्ण को भगवान का ही रूप मानते हैं। उनकी सभी कहानियों से ये भी स्पष्ट होता है कि उनके पास अनंत शक्तियाँ थीं, क्या आप भी उन्हें भगवान मानते हैं?

उत्तर: ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय में जो ज्ञान दिया जाता है वो स्वयं ज्ञान सागर निराकार परमात्मा ने ब्रह्मा के द्वारा दिया, वो ही ज्ञान सम्पूर्ण सत्य है और मनुष्य को पतित से पावन बनाने वाला है। ज्ञान देते हुए उन्होंने बताया कि किसी भी देहधारी को भगवान नहीं कहा जाता, जबकि श्रीकृष्ण को तो अपना देह है। उन्होंने जन्म भी लिया और देह भी छोड़ा, जबकि परमात्मा तो जन्म मरण से न्यारे हैं। इसलिए श्रीकृष्ण भगवान नहीं परंतु भगवान के समान अवश्य हैं, नेक्स्ट टू गॉड हैं।

जब कोई भी आत्मा सम्पूर्ण पवित्र बन जाती है तो वह बहुत शक्तिशाली हो जाती है। यही रहस्य है श्रीकृष्ण के शक्तिशाली होने का, लेकिन उनकी अलौकिक शक्ति मनुष्यों के संहार के लिए नहीं बल्कि दुर्गुणों और आसुरी शक्तियों के संहार के लिए है।

प्रश्न: श्रीकृष्ण जी के बारे में ये जो मान्यतायें प्रचलित हैं कि उनका जन्म जेल में हुआ और जन्म के समय फूलों की बरसात हुई, जेल के ताले खुल गए और बचपन में ही उन्होंने अनेक असुरों का संहार किया, इनमें से कुछ बातें बड़ी काल्पनिक सी लगती हैं, क्या आप इन बातों से सहमत हैं?

उत्तर: सत्य तो ये है कि श्रीकृष्ण के बारे में पुराणों आदि में जो कुछ भी लिखा है, उनसे सभी विद्वान आदि भी सहमत नहीं हैं। किसी भी महापुरुष के चरित्र के साथ बाद में अनेक बातें जुड़ जाया करती हैं, फिर श्रीकृष्ण जी तो इस सृष्टि के महानायक हैं। उनके बारे में कई लेखकों ने कुछ ऐसी-ऐसी बातें भी जोड़ दी हैं, जो हूबहू वैसी नहीं हैं। असुरों आदि के विनाश की जो बातें लिखी हैं, ये वास्तव में आसुरी वृत्तियों के विनाश की बात है।

श्रीकृष्ण, जिनकी भक्ति में बहुत पूजा हो रही है, वो तो सतयुग के सर्वश्रेष्ठ देवता थे, जो कि बाद में चलकर श्रीनारायण के रूप में सिंहासन पर बैठे, वे सम्पूर्ण पवित्र, सम्पूर्ण अहिंसक और सर्व शक्तियों से सम्पन्न थे। उनके काल में असुर होते ही नहीं। ऐसा लगता है कि द्वापर के अंत में इसी नाम से कोई अति शक्तिशाली और दिव्य पुरुष यहां पर थे, उन दोनों के चरित्र को मिला दिया गया है। क्योंकि सतयुग में किसी के संहार की ज़रूरत नहीं होती, अपितु द्वापर के अंत में कुछ आसुरी शक्तियाँ प्रबल हो जाती हैं।

श्रीकृष्ण जब सतयुग के आदि में इस धरा पर अवतरित हुए तो प्रकृति ने उनका स्वागत किया और फूलों आदि की बरसात हुई, परन्तु उनका जन्म जेल में नहीं, सोने के महल में हुआ था। जो कंस आदि के वध की और उनके माता-पिता को जेल में रखने की कहानियाँ हैं, ऐसा लगता है कि इनके पीछे कुछ आध्यात्मिक रहस्य हैं।

प्रश्न: ब्रह्माकुमारीज़ में हम हर जगह ये लिखा पाते हैं कि श्रीकृष्ण आ रहे हैं, हम भी ये पढ़ते-पढ़ते, सुनते-सुनते थक गए हैं, लेकिन श्रीकृष्ण का कोई अता-पता नहीं, वे आएंगे भी या नहीं, या ये आपके प्रचार का ही साधन मात्र है?

उत्तर: ज्ञान सागर परमात्मा ने जब प्रजापिता ब्रह्मा के तन में प्रवेश किया तब सर्वप्रथम उन्हें ही स्थापना और विनाश का सम्पूर्ण साक्षात्कार करा दिया था और कहा था कि अब तुम गहन तपस्या करो और मेरा माध्यम बन जाओ। स्वयं भगवान ने ही ये महावाक्य उच्चारे थे कि आने वाले महाभारी महाभारत युद्ध द्वारा विनाश के बाद श्रीकृष्ण का इस धरा पर आगमन होगा और ये धरा स्वर्ग बन जायेगी।

श्रीकृष्ण तो जल्दी ही आना चाहते हैं, लेकिन लोग सच्चे मन से उनका आह्वान नहीं करते। इसका बड़ा गुह्य अर्थ है। विषय-वासनाओं में लिप्त आत्माओं के आह्वान पर वो देवात्मा नहीं आयेंगे। उनका आह्वान करने के लिए तो स्वयं को पावन बनाना होगा, देवत्व से सम्पन्न करना होगा। यही कारण है कि वो महान देवात्मा सभी के पवित्र होने का इंतज़ार कर रही है। दूसरी बात, उनका आगमन कलियुग की इस तमोप्रधान और पाप से भरी दुनिया में नहीं हो सकता। उनके लिए तो प्रकृति और मनुष्य दोनों का सम्पूर्ण पवित्र होना आवश्यक है।

तो जल्दी-जल्दी आप भी पवित्र बन जाइये और इस तरह जब अनेक मनुष्यात्मायें पवित्र बन जायेंगी तो इस कलियुगी सृष्टि का विनाश हो जायेगा और ये संसार देवताओं के आगमन के लिए तैयार हो जायेगा। हमें पूर्ण विश्वास है कि अब शीघ्र ही आपके इंतज़ार की घड़ियां समाप्त हो जायेंगी और जल्दी ही श्रीकृष्ण इस धरा पर आ जायेंगे।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

लखनऊ-जानकीपुरम। 'तनाव मुक्ति शिविर' का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए विधायक डॉ. नीरज बोरा, ब्र.कु. पूनम, ब्र.कु. सुमन तथा अन्य ब्र.कु. बहनें। कार्यक्रम के दौरान योगाभ्यास करते हुए शहर के भाई बहनें।

धन्य हैं श्रीकृष्ण और उनका जीवन

श्री कृष्ण जन्माष्टमी के दिन श्री कृष्ण का जन्म दिन भारत के हर नगर में बहुत ही उत्साह और उल्लास से मनाया जाता है। इस दिन स्थान-स्थान पर देवताओं में श्रेष्ठ श्रीकृष्ण की मधुर चर्चा होती है। भारतवासियों को श्रीकृष्ण बहुत प्रिय हैं क्योंकि उनका जीवन और उनका कार्य-व्यवहार बहुत पवित्र और मन को लुभाने वाला था। उनकी सतोगुणी काया, सौम्य चितवन, हर्षितमुखता और उनका शीतल स्वभाव सबके मन को मोहने वाला था।

श्रीकृष्ण का जन्म 'धन्य' था

श्रीकृष्ण के जन्म को लोग बहुत ही 'धन्य' मानते हैं और इस कारण उनके जन्म स्थान आदि का वर्णन भी 'धन्य मथुरा', 'धन्य गोकुल' इत्यादि शब्दों में करते हैं। उनके जन्म और उनकी किशोरावस्था और बाद के भी सारे जीवन को लोग दैवी जीवन मानते हैं। उन्हें श्रीकृष्ण इतने महान और प्यारे लगते हैं कि ''मोर मुकुट धर मुरली सोहे'' आदि पदों से वे उनके श्रृंगार का भी वर्णन करते हैं। परन्तु फिर भी श्रीकृष्ण के जीवन में जो मुख्य विशेषतायें थीं और जो अनोखी प्रकार की महानता थी, उसको लोग आज यथार्थ रूप में और स्पष्ट रीति से नहीं जानते। उदाहरण के तौर पर वे यह नहीं जानते कि श्रीकृष्ण का व्यक्तित्व इतना आकर्षक क्यों था और वे पूज्य श्रेणी में क्यों गिने जाते हैं? पुनश्च, उन्हें यह भी ज्ञात नहीं है कि श्रीकृष्ण ने उस उत्तम पदवी को किस उत्तम पुरुषार्थ से पाया था। अत: हम यहाँ इन रहस्यों का कुछ संक्षिप्त वर्णन करेंगे क्योंकि इन रहस्यों का ज्ञान अत्यावश्यक है।

गायन-योग्य और पूजने योग्य जीवन में अन्तर

किसी नगर या देश की जनता जन्म-दिन उन्हीं का मनाया करती है जिनके जीवन में कुछ महानता रही हो। परन्तु आप देखेंगे कि महान् व्यक्ति भी दो प्रकार के हुए हैं। एक तो वे जिनका जीवन जन-साधारण से काफ़ी उच्च तो था परन्तु फिर भी उनकी मनसा पूर्ण अविकारी न थी, उनके संस्कार पूर्ण पवित्र न थे और उनकी काया सतोप्रधान तत्वों की बनी हुई न थी। उन्हें देवता नहीं माना जा सकता, क्योंकि उनका जन्म अपवित्र रीति (मैथुनी रीति) से माता-पिता की काम-वासना के परिणामस्वरूप हुआ था। कुछ विशेष गुणों और कर्त्तव्यों के कारण ऐसे व्यक्तियों का गायन तो सारे संसार में होता है परन्तु पूजन नहीं होता क्योंकि पूजा केवल देवी-देवताओं की या देवों-के-देव परमपिता परमात्मा की ही होती है। दूसरे प्रकार के व्यक्ति वे हैं जो पूर्ण निर्विकारी थे; जिनके संस्कार सतोप्रधान थे और जिनका जन्म भी काम विकार से न होकर योगबल द्वारा हुआ था। ऐसे व्यक्तियों को 'देवता' कहा जाता है; उनका जीवन गायन-योग्य भी होता है और पूजन-योग्य भी। श्रीकृष्ण और श्रीराम ऐसे ही पूजन-योग्य व्यक्ति थे। परन्तु श्रीकृष्ण के बारे में यह महत्वपूर्ण रहस्य लोग नहीं जानते। हालांकि इसी कारण ही उनके व्यक्तित्व में विशेष आकर्षण था और उनके जीवन में दिव्यता थी।

ध्यान देने योग्य बात है कि पहले प्रकार के व्यक्तियों का जीवन 'बाल्यकाल' से ही गायन या पूजने के योग्य नहीं होता बल्कि वे बाद में कोई उच्च कार्य करते हैं जिसके कारण देशवासी या नगरवासी उनका जन्म-दिन मनाते हैं। परन्तु श्रीकृष्ण तथा श्रीराम आदि देवता तो बाल्यावस्था से ही महात्मा थे; वे कोई सन्यास करने या शिक्षा-दीक्षा लेने के बाद पूजने के योग्य नहीं बने थे। आपने देखा होगा कि उनके बाल्यावस्था के चित्रों में भी उनको प्रभा-मण्डल (क्राउन ऑफ लाइट) से सुशोभित दिखाया जाता है जबकि अन्यान्य महात्मा लोगों को सन्यास करने के पश्चात् अथवा किसी विशेष कर्त्तव्य के पश्चात् ही प्रभा-मण्डल दिया जाता है। श्रीकृष्ण की किशोरावस्था को भी इसी कारण से माताएँ बहुत याद करती हैं और भगवान् से प्रार्थना करती हैं कि यदि बच्चा हो तो श्रीकृष्ण जैसा हो, क्योंकि वे बाल्यावस्था से ही पूज्य थे।

श्रीकृष्ण के 'मोर-मुकुट' से उनकी पवित्रता सिद्ध है

मोर-पंख पवित्रता का प्रतीक है। धर्म-ग्रंथों पर कई लोग जो चंवर घुमाते हैं वह चंवर मोर-पंखों के बने होते हैं। अपनी पुस्तकों में भी कई लोग मोर-पंख रखते हैं। इसका कारण यही है कि लोग मोर को पवित्र पक्षी मानते हैं। श्रीकृष्ण के मुकुट में मोर-पंख इसी रहस्य के प्रतीक हैं कि वह पूर्ण पवित्र थे।

इसके अतिरिक्त प्रभा-मण्डल भी निर्विकारिता का सूचक है। 'श्री' की उपाधि से भी सिद्ध होता है कि कृष्ण पूर्ण पवित्र थे। आज तो 'श्री' शब्द को रस्मी तौर पर 'मिस्टर' शब्द के स्थान पर प्रयोग कर दिया जाता है परन्तु वास्तव में 'श्री' शब्द केवल देवताओं के नाम के आगे प्रयोग हो सकता है क्योंकि उनका जीवन पवित्र होता है। श्रीकृष्ण की 'वैकुण्ठनाथ' की उपाधि से सिद्ध है कि उनका जन्म पूर्ण पवित्र था। आप सोचिये कि जबकि श्रीकृष्ण की अनन्य भक्ति करने वाले नर-नारी भी काम-विकार को छोड़कर ब्रह्मचर्य व्रत धारण करते हैं तो स्वयं श्रीकृष्ण का जन्म इस विकार से कैसे हुआ होगा? मीरा का उदाहरण हमारे सामने है उसने श्रीकृष्ण की भक्ति के कारण अपने सारे जीवन में ब्रह्मचर्य का पालन किया और इसके लिए विष का प्याला भी पीना सहर्ष स्वीकार कर लिया। अत: जबकि श्रीकृष्ण की भक्ति के लिए, उनका क्षणिक साक्षात्कार मात्र करने के लिए और उनसे कुछ मिनट रास रचाने के लिए भी काम-विकार का पूर्ण बहिष्कार ज़रूरी है तो आप सोचिये कि श्रीकृष्ण के माता-पिता, मित्र-सम्बन्धी इत्यादि काम-वासना वाले लोग कैसे हो सकते हैं? श्रीकृष्ण के साक्षात् स्वरूप को तो काम-वासना वाले लोग छू भी नहीं सकते, उन्हें निहार भी नहीं सकते। अत: सिद्ध है कि उनका जन्म और जीवन पूर्णत: पवित्र था। इस कारण यह वाक्य प्रचलित है कि 'जहाँ श्याम हैं, वहाँ काम नहीं और जहाँ काम है वहाँ श्याम नहीं।'

श्रीकृष्ण पर मिथ्या कलंक

श्रीकृष्ण के सम्बन्ध में उपर्युक्त तथ्यों से स्पष्ट है कि श्रीकृष्ण पूर्ण निर्विकारी व बिल्कुल ही पवित्र थे। इसलिए भक्त लोग उनके प्रत्येक अंग के नाम के पूर्व 'कमल' शब्द जोड़ते हैं; यथा- कमल नयन, कमल मुख, कमल हस्त इत्यादि। परन्तु दूसरी ओर आज लोग श्रीकृष्ण पर अनेक मिथ्या कलंक भी लगाते हैं। वे कहते हैं - श्रीकृष्ण की 108 पट-रानियाँ थीं, उनसे उनके हज़ारों बच्चे पैदा हुए, उन्होंने गोपियों के चीर चुराये, उन्होंने हिंसक युद्ध कराया, इत्यादि-इत्यादि। इस प्रकार वे काम, क्रोध, हिंसादि विकारों के दाग लगाते हैं। इससे बहुत अनर्थ हुआ है। आप ही सोचिये कि जबकि महात्मा लोग भी अहिंसा पालन करते हैं और ब्रह्मचर्य व्रत धारण करते हैं तो क्या महात्माओं के भी पूज्य देव-शिरोमणि श्रीकृष्ण पूर्ण अहिंसक और अकामी न होंगे? द्वापर युग और कलियुग के लोगों के अपने जीवन में ही काम, क्रोध, हिंसा आदि ने पक्के डेरे डाल रखे हैं; इसलिए ''जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि'' की उक्ति के अनुसार वे विकारी लोग श्रीकृष्ण के उज्जवल चरित्र पर भी काले धब्बे लगाते हैं। इस बारे में हमें एक दृष्टान्त याद आता है –

कहते हैं कि एक किसान ने अपनी ज़मीन का लगान (कर, रेवेन्यु) राजा को नहीं दिया था। इस अपराध की सज़ा में राजा ने उसे शहर से निकल जाने की आज्ञा दी। वह किसान नगर छोड़कर जंगल में चला गया। वहाँ एक कुटिया के बाहर उसने एक सन्यासी को बैठे देखा। किसान ने सन्यासी से पूछा – ''क्यों जी, आपने अपनी ज़मीन का लगान नहीं दिया था जिससे कि राजा ने आपको नगर से निकाल दिया?''

अब वास्तव में राजा ने सन्यासी को निकलने की आज्ञा तो नहीं दी थी परन्तु किसान को जैसा अनुभव था, उसने दूसरे के बारे में भी वैसा सोच लिया। ठीक इसी प्रकार, जिन लोगों को पूर्ण पवित्रता का अनुभव नहीं है, वे समझते हैं कि सभी विकारी हैं और सभी विकारी थे।

सोलह कला सम्पूर्ण श्रीकृष्ण

श्रीकृष्ण के लिए तो प्रसिद्ध है कि उन्होंने द्रोपदी के चीर बढ़ाये थे और लाज रखी थी और 'देवता' शब्द का तो प्रयोग ही उन्हीं के लिए है जिनकी दृष्टि, वृत्ति और कृति दिव्य हो। यदि किसी के कर्म मनुष्यों की तरह विकारी हैं तो वह 'पूज्य' अथवा 'देवता' किस अर्थ में कहा जा सकता है?

अत: निस्संदेह श्रीकृष्ण पूर्ण निर्विकारी थे। वे सोलह कला सम्पूर्ण थे। आज लोग कला का अर्थ नृत्य कला, संगीत कला इत्यादि मानते हैं और वे समझते हैं कि श्रीकृष्ण बाँसुरी बजाने में, रास रचाने में, युद्ध लड़ने में निपुण थे और इस प्रकार सोलह कला सम्पन्न थे। परन्तु वास्तव में कला का अर्थ दर्जा (डिग्री) है। चाँद अमावस्या के बाद से लेकर पूर्णमासी तक प्रतिदिन जितना बढ़ता है उसे कला कहते हैं। पूर्णमासी के दिन वह सोलह कला सम्पूर्ण प्रकाशमान होता है। इसी प्रकार श्रीकृष्ण को 'सोलह कला सम्पूर्ण' कहने का अर्थ यह है कि वह पूर्ण पवित्र थे, उनमें अपूर्णता न थी। यह महिमा किसी महात्मा, गुरू या व्यक्त देवता की नहीं है। अत: अन्दाज़ा लगाना चाहिये कि वह कितने उच्च थे; कितने महान् थे! जन्म-अष्टमी के दिन ऐसी दिव्य आत्मा का जन्मदिन मनाया जाता है। यह किसी साधारण आत्मा या सामान्य महात्मा का जन्म-दिन नहीं है। इसलिए इसे समझकर मनाना चाहिए।

श्रेष्ठ कर्म ही आधार, श्रेष्ठ जीवन का

ज्ञानसरोवर। कोई भी अपनी श्रेष्ठ करनी से ही प्रख्यात होता है। करनी को सुधारने की ज़रूरत है। करनी सुधरेगी राजयोग के अभ्यास से। परमात्मा शिव ने प्रजापिता ब्रह्मा के माध्यम से महिलाओं को ही नए विश्व का आधार बनाया। आज 80 वर्षों के बाद परमात्मा का यह ज्ञान दुनिया भर में फ़ैल चुका है। उक्त विचार ब्रह्माकुमारीज़ के महिला प्रभाग द्वारा आयोजित 'महिलाओं का सर्वांगीण विकास' विषयक अखिल भारतीय सम्मेलन में राजयोगिनी चक्रधारी दीदी, सम्मेलन की अध्यक्षा ने व्यक्त किये।

उन्होंने कहा की दादियों के रूप में आज वे बहनें माताएं विश्व स्तर पर आध्यात्मिक लीडर्स के रूप में सर्व के जीवन को पवित्र बना रही हैं। आज भी यह कार्य जारी है।

ब्र.कु.शीलू, ब्रह्माकुमारीज़ राजयोग शिविर कार्यक्रमों की निदेशिक ने कहा कि एक शिक्षित नारी पूरे परिवार के विकास की धुरी है। नारी के विकास से ही विश्व का भी विकास संभव है। उन्होंने कहा कि भौतिक, मानसिक, बौद्धिक, भावनात्मक, नैतिक और आध्यात्मिक विकास से ही किसी भी नारी का सर्वांगीण विकास माना जायेगा, अन्यथा विकास अधूरा है।

नेत्रहीनता निवारण राष्ट्रीय कार्यक्रम, भारत सरकार की उप महानिदेशक डॉ. प्रमिला गुप्ता ने कहा कि इस सम्मेलन का विषय काफ़ी समयानुकूल है। नारी का सर्वांगीण विकास एक बड़ी बात है। नारियों को आत्म विकास करना होगा। ब्रह्माकुमारीज़ की शिक्षाएं नारियों का सर्वांगीण विकास करेंगी, ऐसा मेरा पूर्ण विश्वास है।

डॉ. एन्थोनी राजू, ऑल इंडिया काउंसिल ऑफ़ ह्यूमन राइट्स के संस्थापक तथा वैश्विक अध्यक्ष ने कहा कि मैं ब्रह्माकुमारीज़ का शुक्रगुज़ार हूँ कि आपने मुझे यहां अपना विचार रखने का अवसर दिया। नारियां मूल्यों की खान हैं, ईश्वर ने उनको ख़ास रीति से संवारा है। परंतु इसके साथ ही यदि आज के समय में नारियों का सशक्तिकरण हो तो संसार संवर जाएगा।

प्रभाग की मुख्यालय संयोजिका ब्र.कु. डॉ. सविता ने कहा कि समाज व परिवार के माहौल को श्रेष्ठ बनाने के लिए नारी शक्ति को व्यर्थ की बातों को छोड़ अपनी आंतरिक क्षमताओं को बढ़ाने के बारे में सोचना चाहिए।

वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका ब्र.कु. मोहिनी, गंगानगर ने कहा कि नैतिक मूल्यों का विकास करने में महिलाओं को अपना मानसिक धरातल आध्यात्मिकता से भरपूर रखना चाहिए। इसके लिए राजयोग का अभ्यास ज़रूरी है।

महिला सम्मेलन में सम्बोधित करते हुए डॉ. एन्थोनी राजू, ऑल इंडिया काउंसिल ऑफ़ ह्यूमन राइट्स के संस्थापक तथा वैश्विक अध्यक्ष। मंचासीन हैं ब्र.कु. डॉ. सविता, ब्र.कु. चक्रधारी, ब्र.कु. शीलू, डॉ. प्रमिला गुप्ता तथा ब्र.कु. मोहिनी।

सद्भावना से सर्व समस्याओं का अंत

ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा 'गांवों के सर्वांगीण विकास' विषय पर त्रिदिवसीय सम्मेलन

ज्ञानसरोवर। ब्रह्माकुमारीज़ के कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग द्वारा 'गांव के सर्वांगीण विकास का आधार-सद्भावना' विषय पर एक अखिल भारतीय सम्मेलन का आयोजन हुआ। इस सम्मेलन में बड़ी संख्या में प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग की अध्यक्षा ब्र.कु. सरला दीदी ने कहा कि आध्यात्मिकता के आधार पर ही हम मन में सर्व के लिए सद्भावना भर सकेंगे। पूरी दुनिया के लिए मन में सद्भावना रखने से धरती माता धन्य होंगी और संसार को धन धान्य से परिपूर्ण कर देंगी। आत्मा के ज्ञान से सारे किसान जागृति को प्राप्त करेंगे।

डॉ. राम खर्चे, चेयरमैन, पूना कृषि संस्थान ने कहा कि जैसे अपने बच्चे के लिए प्राकृतिक रूप से सद्भावना बनी रहती है, वैसी ही सद्भावना सर्व के लिए होनी चाहिए। सद्भावना के अभाव में ही हम हर वर्ष काफी बड़े पैमाने पर बायो मास को नष्ट कर देते हैं - जला देते हैं, जबकि हम उनको कम्पोस्ट के रूप में प्रयोग में ला सकते हैं।

जय प्रकाश, उप निदेशक, पूसा कृषि शोध संस्थान ने सद्भावना की बात को वैज्ञानिक स्वरूप प्रदान करके जन जन तक पहुँचाने की ज़रूरत पर बल दिया। उन्होंने कहा कि मैंने यहां से सीखा कि सन्तुष्टता कैसे जीवन में प्राप्त की जा सकती है।

प्रदीप यादव, पूर्व कृषि मंत्री, उत्तर प्रदेश शासन ने कहा कि यहां का वातावरण बहुत सुन्दर है और मैं जीवन में पहली बार इतना प्रसन्न हुआ हूँ। सत्य पर चलने से सारी समस्यायों का अंत हो जाता है। हमारे किसान विपरीत परिस्थितियों को समझते हैं और उनसे बचना भी जानते हैं। अब सिर्फ सद्भावना अपने जीवन में अपनाकर दुनिया सुखमय बनाने में अपना योगदान देते रहें।

मध्य प्रदेश किसान कल्याण, कृषि मंत्री गौरीशंकर बिसेन ने कहा कि अध्यात्म से मूल्यों को निखार लिया जाए तो किसानों की आर्थिक उन्नति तीव्रगति से हो सकती है। उन्होंने कहा कि स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद जैविक व यौगिक खेती को बढ़ावा देना चाहिए। ब्रह्माकुमारी संगठन द्वारा गांव-गांव में किए जा रहे कार्य सार्थक सिद्ध हो रहे हैं।

गुजरात दाहोद शहर से आए इंडोजर्मन वाटरशेड मैनेजमेंट अध्यक्ष राजेश दवे ने कहा कि गांव के बेहतर - शेष पेज 6 पर

सम्मेलन में सम्बोधित करते हुए म. प्र. किसान कल्याण कृषि मंत्री गौरीशंकर बिसेन। मंचासीन हैं ब्र.कु. किरण, राजयोगिनी ब्र.कु. सरला, राजयोगी ब्र.कु. राजू, ब्र.कु. राजेन्द्र तथा ब्र.कु. महेन्द्र ठाकुर।

समाज सेवा में नि:स्वार्थ भाव को बनाए रखें

- मांगने की आदत छोड़ो, सिर्फ बाँटो, जीवन यही है हमारा
- विज़न बड़ा हो, महान हो, ये हमारे लिए बहुत ज़रूरी है

ज्ञानसरोवर। ब्रह्माकुमारीज़ के समाज सेवा प्रभाग द्वारा 'सदा सुखी एवं स्वस्थ समाज' विषय पर आयोजित त्रिदिवसीय अखिल भारतीय सम्मेलन में समाज सेवा प्रभाग की अध्यक्षा रजयोगिनी ब्र.कु. संतोष दीदी ने सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए कहा कि सब सदा स्वस्थ रहें और सदा ख़ुशी में नाचते रहें - सभी का यही लक्ष्य रहता है। बगैर प्रेम के जीवन बेकार है, औरों को ख़ुशी प्रदान करने से ही ख़ुशी प्राप्त होती है, लेकिन आज हर कोई लेना तो चाहता है मगर देना नहीं चाहता।

मुख्य अतिथि राजस्थान सरकार के पी.एच.ई.डी. राज्य मंत्री सुशील कटारा ने कहा कि मैं हमेशा से ब्रह्माकुमारीज़ से सम्बद्ध होकर आनंदित होता रहा हूँ। हम सभी को मन लगाकर अपने दायित्व को ईमानदारी से निभाना चाहिए। उन्होंने कहा कि त्याग में ही हमारा भाग्य है। मांगने की आदत ना रहे। समाज की सेवा के लिए अपना सब कुछ कुर्बान करें। सभी को ख़ुशी प्रदान करें।

समाज सेवा प्रभाग के उपाध्यक्ष रजयोगी ब्र.कु. अमीर चंद ने इस सम्मेलन का लक्ष्य बताया और कहा कि आप सभी समाजसेवी दुनिया की पीड़ा को महसूस करते हैं और उनकी मदद के लिए आगे आते हैं। आप इसीलिए अन्य लोगों से ख़ास हैं।

समाजसेवी सानु भाई कार्की, नेपाल ने कहा कि समर्पित, उत्तरदायी, ऊर्जावान लोग ही समाज की सेवा कर सकते हैं। समाजसेवियों को अपने विज़न के अनुरूप आगे बढ़ते रहना चाहिए। विज़न बड़ा हो, महान हो, ये ज़रूरी है।

विकास खोलिया, उपाध्यक्ष, अनुसूचित जाति आयोग, राजस्थान ने कहा कि सभी चाहते हैं कि सभी स्वस्थ और सुखी रहें - समाज भी स्वस्थ और सुखी रहे। मगर यह अध्यात्म और राजयोग से ही संभव होगा।

समाज सेवा प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक राजयोगी ब्र.कु. प्रेम ने आये हुए सभी मेहमानों का हार्दिक स्वागत किया। समाज सेवा प्रभाग के मुख्यालय संयोजक ब्र.कु. अवतार ने मेहमानों का आभार प्रकट किया और उनको धन्यवाद दिया। ब्र.कु. वंदना ने मंच संचालन किया।

कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए राज्यमंत्री सुशील कटारा। मंचासीन हैं ब्र.कु. वंदना, ब्र.कु. प्रेम, ब्र.कु. अमीरचंद, ब्र.कु. संतोष दीदी तथा अन्य।

RNI NO RAJHN/2000/721, POSTAL REGD. RJ/SIROHI/9623/15-17, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2015-17, Posting on 12TH TO 14TH and 22ND TO 24TH each month, published on 3rd Aug 2017
संपादक: ब्र.कु.गंगाधर, प्रकाशक: ब्र.कु.करुणा द्वारा ब्रह्माकुमारीज़ मीडिया प्रभाग (आर.ई.आर.एफ) के लिए प्रकाशित एवं डी.बी.प्रिंट सॉल्यूशन्स जयपुर से मुद्रित।